मार्च १९४१] # देश-दर्शन [चैत्र १९९८

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष २] [संख्या ६

थाई देश

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

5462

प्रकाशक

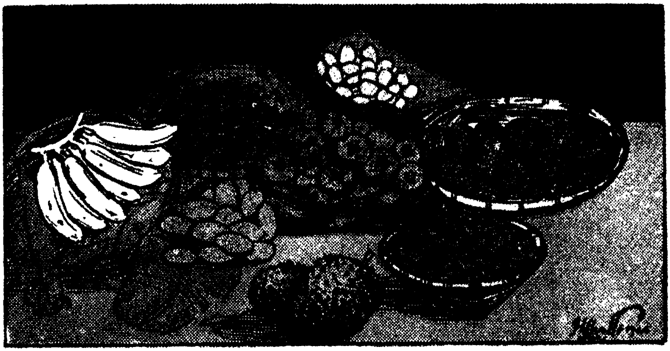
भूगोल-कार्यालय, इलाहाबाद

9-2456/23.1.52

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This Copy As -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची



थाई देश के गरमी के फल



थाई देश में रंग के बर्तनों का बनाना

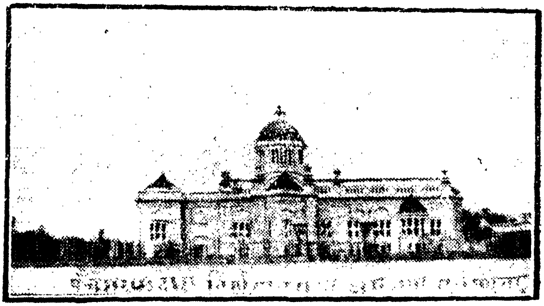
थाईलैंड का संक्षिप्त इतिहास

प्राचीन काल में थाइलैण्ड (स्याम) देश पर बहुत से आक्रमण हुये। आक्रमणकारियों ने वहां के आदि निवासियों को पर्वतों की ओर ढकेल दिया था। आदि निवासियों की सन्तान अब भी पर्वतों के मध्य कहीं कहीं पर मिलती है। वह छोटे काले रंग के होते हैं उनके बाल घुँघरे होते हैं। वह अब भी असभ्य तथा जंगली हैं।

आक्रमणकारी जातियों में दो प्रधान जातियां ताई और कमेन थीं। ताई जाति को चीन के राजा ने दक्षिणी-पश्चिमी चीन से निकाल बाहर किया था इसलिये वह अपने लिये नया निवास स्थान बनाने के लिये थाईलैण्ड में आई थी। कमेन जाति के लोग कम्बोडिया प्रान्त के निवासी थे और वह अपने राजा के हेतु नया देश जीतने के ध्यान से स्याम में आये थे।

कुछ समय तक ताई और कमेन जातियां लड़ती झगड़ती रहीं परन्तु फिर उनमें समझौता हो गया और आपस में एक दूसरे से विवाहित सम्बन्ध होने लगा। धीरे धीरे दोनों जातियां घुल मिल कर एक जाति बन

गई। चीनी लोग प्राचीन काल में इसी देश को सीम कहते थे। सीम से बिगड़ कर इसका नाम स्याम पड़ा। स्याम के निवासी ताई कमेन जाति वाले स्यामी कहलाने लगे। स्यामी लोग अपने को थाई कहते हैं। थाई ताई अथवा थाई शब्द का अर्थ स्वतंत्र होता है। थाई लोग



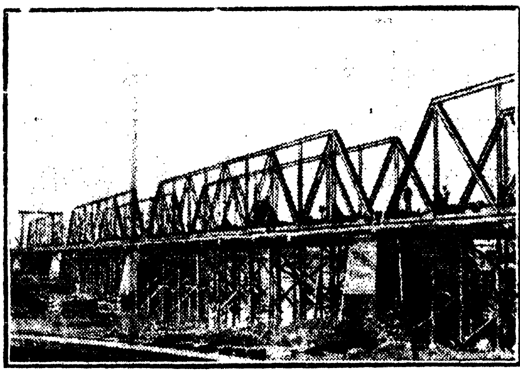
नया राजप्रासाद

अपने देश को मुआंग थाई (स्वतंत्र लोगों का देश) कहते हैं।

थाई देश के आदि निवासियों को कम्बोडिया, पेगुवान, अनाम, बरमा आदि देश के निवासियों से बड़ी बड़ी लड़ाइयां लड़नी पड़ीं।

थाईलैंड के प्राचीन बड़े राजाओं में प्रारुवांग राजा

का नाम सब से पहले आता है। इस राजा ने अपने देश को विदेशियों के चंगुल से छुड़ाया था और अपने देश के भीतर राज्य स्थापित करके देश के लिये नियम बनाये थे। उसकी छत्र-छाया में थाई देश उन्नति की ओर अग्रसर हुआ था। यद्यपि प्रारुवांग को मरे लगभग



मेहवंग के ऊपर नाकोन लम्पांग में उत्तरी लाइन का पुल

८०० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं तो भी आज उसके सम्बन्ध में सहस्रों कहानियां प्रसिद्ध हैं। थाई बालक सर्व प्रथम इन्हीं कहानियों का अध्ययन करते हैं। प्रारुवांग की बहुत सी कहानियाँ अब परियों की गाथाओं की भाँति हो गई हैं। कहा जाता है कि प्रारुवाँग राजा की मृत्यु नहीं

हुई वरन् वह अपने महल के समीप वाली एक नदी में अदृश्य हो गया है और थाई देश के संकट के समय वह फिर निकलेगा।

थाई देश का दूसरा प्रसिद्ध राजा प्रानरेट था। जिस समय यह राजा हुआ उस समय थाई देश पर चारों ओर से शत्रुओं का आक्रमण हो रहा था। प्रानरेट ने बमरा तथा कम्बोडिया के निवासियों को परास्त करके अपने देश को स्वतंत्र बनाया था और फिर बहुत सी पड़ोस की भूमि जीत कर अपने देश में मिलाई थी।

ठीक बरमा की विजय के समय प्रानरेट राजा की मृत्यु हो गई थी। यदि उसकी मृत्यु न होती तो ब्रिटिश साम्राज्य की सीमा कुछ और ही हुई होती।

थाईलैण्ड के इतिहास में कान्स्टैराइन फाल्कन का नाम बहुत प्रसिद्ध है। यह एक यूनानी मनुष्य था। इसका पिता एक सराय का मालिक था। बालपन ही में फाल्कन अपने घर से भाग निकला था और स्याम में जाकर उसने राजा के यहां नौकरी कर ली थी। धीरे धीरे वह राजा का मन्त्री बन गया था। स्याम के राजा

का फाल्कन पर बड़ा विश्वास था इस कारण राजा राज-काज फाल्कन की सलाह से ही किया करता था। उसकी अच्छी सलाह के कारण थाई देश उन्नति तथा



एक नागरिक भद्र महिला

सभ्यता की ओर अग्रसर हुआ था। स्यामी लोग फाल्कन को बढ़ती शक्ति देख कर उससे घृणा करने लगे थे। घृणा की ज्वाला इतनी बढ़ी थी कि राजमहल में क्रान्ति

हो गई और फाल्कन राजा और राज्य-कुटुम्ब के सभी लोग जान से मार डाले गये।

लगभग १७० वर्ष हुये बरमी लोगों ने स्याम को जीता था वहाँ की राजधानी अयूथिया का सत्यानाश



पंचम राम की कनिष्ठ पत्नी लक्ष्मी लावण्य

कर के हज़ारों स्यामी लोगों को कैद कर के अपने देश को ले गये थे। स्याम अथवा थाई देश में एक बरमी व्यक्ति वाइसराय बनाया गया था। बरमी वाइसराय ने अयूथिया नगर और उसके पड़ोस की भूमि पर राज्य

करता रहा। शेष देश पर लुटेरे लोग लूट मार करते रहे। फ्याताक नामक व्यक्ति लुटेरों का सर्दार था। उसने अपने सहकारियों की सहायता से बरमी वाइसराय पर धावा मारा और उसे परास्त किया। उसके



छठे राम और उनका परिवार

पश्चात् वह थाई देश का राजा बना और उसने अपने देश को पहले की भाँति फिर स्वतंत्र तथा सुखी बनाया। वह अपनी निर्दयता के कारण अप्रिय हो गया था इसलिये उसकी हत्या कर दी गई थी।

देश दर्शन

चूला लोनकोन थाई देश का सब से बड़ा राजा था। वह १८६८ ई० में गद्दी पर बैठा था और १९१० ई० में उसकी मृत्यु हुई थी। जब वह गद्दी पर बैठा था तो उसका देश असभ्य, गरीब और कंगाल था। देश में खराब रीति-रिवाजों की धूम थी। उसने अपने देश को स्वतंत्र, सभ्य और मालामाल बनाया। देश में अच्छे नियमों का सञ्चालन किया गया। थाई देश की गणना संसार के सभ्य देशों में होने लगी।

चूला लोनकोन १७ साल की अवस्था में गद्दी पर बैठा था। राजगद्दी के समय उसका बड़ा सम्मान किया गया था। उसे बड़ी भारी उपाधि मिली थी। उसकी पूर्ण उपाधि तो बहुत बड़ी थी परन्तु उसका कुछ भाग यह है "महाराज फ्रावत सोमदेच फ्रा प्रामिन्द्र महा चूला लोनकोन फ्रा चूला चोम काव चाव यू हुआ"। उसके लिये बहुत से राज्यभवन बनवाये गये थे। नौकर चाकर घोड़े तथा स्वेत हाथी उसकी सेवा के लिये उपस्थित किये गये थे। अच्छे गवइये, नाचने वाले, नाटक करने वाले और नाचने वाली लड़कियां उसका जीवन सुखमय बनाने के लिये रक्खी गई थीं। राज्य

दरबार के अफसर उसे सुखमय बना कर अपना आर्थिक लाभ करना चाहते थे परन्तु उनकी आशाओं पर पानी फिर गया। नव-युवक राजा ने सब से पहले राज-दरबार के खराब अफसरों को निकाल बाहर किया उसके बाद उसने अपनी प्रजा के हित के लिये काम आरम्भ किया। उसके अच्छे कर्मों के कारण स्यामी लोग उससे बड़ा प्रेम करने लगे थे। उसकी मृत्यु पर स्यामी लोगों को पितृवत् शोक प्राप्त हुआ था।



देश दर्शन

जल के ऊपर का जीवन

थाई देश की प्राचीन राजधानी अयूथिया थी परन्तु वर्तमान राजधानी बैङ्काक है। यह पूर्व का वेनिस कहलाता था। पहले नगर के अन्दर बहुत अधिक नहरें थीं परन्तु अब नहरें मिट्टी से पट गई हैं। अयूथिया नगर एक टापू वाला नगर है। इस नगर में थाई लोगों के प्राचीन जीवन का अच्छा अध्ययन होता है। इस स्थान पर बहुत से जल मार्ग एक दूसरे को काटते हैं। लोग अधिकतर नदियों, नहरों और जलाशयों के तट पर निवास करते हैं। लोग अपने घर ऊँचे ऊँचे लकड़ी के लट्ठों अथवा लट्ठों के पानी पर तैरते हुये बेड़ों पर बनाते हैं।

लकड़ी के बेड़े पानी रहने पर पानी के ऊपर तैरते रहते हैं और पानी सूख जाने पर कीचड़ के ऊपर आ जाते हैं। घर नदी अथवा नहर के तटों पर पानी के ऊपर बनाए जाते हैं। घरों का अगला भाग पानी की ओर खुला रहता है और पिछला द्वार एक तख्ते द्वारा स्थल से मिला रहता है।

पानी के भीतर लकड़ी के बड़े बड़े लट्ठे गाड़ दिये



जाते हैं। उन पर लट्ठों के बेड़ों पर तैरते हुये घर इस प्रकार बनाये जाते हैं कि पानी के उतार-चढ़ाव के अनुसार घर ऊपर उठते तथा नीचे उतरते रहते हैं। घरों के सामने एक दालान या बराम्दा रहता है। इसी बराम्दे में लोग अपना अधिकांश समय व्यतीत करते हैं। वह बराम्दे में दूकान भी रखते हैं। बराम्दे में ही घर के सब लोग स्नान करते हैं। वह बाल्टी से पानी खींच कर अपने ऊपर डालते हैं।

जब तैरते हुये घरों के निवासी अपने स्थान से किसी दूसरे स्थान पर जाना चाहते हैं तो वह अपने तैरते हुये घर के साथ ही साथ जाते हैं। धनी लोग अपने तैरते घरों के खींचने के लिये भाप से चलने वाली नावों का प्रयोग करते हैं परन्तु ग़रीब लोग अपने सम्बन्धी तथा मित्रों को अपनी सहायता के लिये बुला लेते हैं और बल्लों द्वारा अपने घर को खींच कर ले जाते हैं।

कुछ जल निवासी लोग नावों पर निवास करते हैं और अपनी इच्छा अथवा कार्य के अनुसार वह एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते रहते हैं। बहुत से

लोग अपनी समस्त जीवन यात्रा नावों पर ही समाप्त करते हैं। वह नाव पर ही पैदा होते हैं, वहीं उनका पालन पोषण होता है, वहीं उन्हें शिक्षा मिलती है, वहीं पर वह शादी व्याह करते हैं और उनके जीवन का अंत भी वहीं पर होता है। नाव पर बहुत कम जगह रहती है फिर भी वह बड़े आनन्द से रहते हैं। स्यामी लोग बड़े प्रसन्नचित्त होते हैं।

जल पर रहने वाले लोग अपनी आवश्यकताओं के लिये स्थल निवासियों पर निर्भर नहीं रहते हैं। जल में तैरने वाले होटल, रिस्टोरेण्ट नाटकालय और प्रत्येक भांति की दूकानें भी होती हैं। जल में रहने वाले लोगों का अपना अलग नदी के ऊपर बाज़ार रहता है। बाज़ार में सौदा बेचने तथा खरीदने वाली अधिकाँश स्त्रियाँ होती हैं। स्यामी स्त्रियाँ मनुष्यों के अनुसार अधिक चतुर तथा फुर्तीली होती हैं। सूर्योदय के साथ ही साथ बाज़ार खुल जाता है और सात आठ बजे सवेरे तक लगा रहता है। प्रातःकाल नावों का जमघट इस प्रकार होता है कि एक इंच भी पानी दिखाई नहीं पड़ता है। नावों पर अंडे, मछलियाँ, चावल और फल

आदि लदे रहते हैं। प्रत्येक नाव पर एक टिमटिमाता हुआ दिया रहता है जिसके प्रकाश में काले बाल तथा श्याम चमड़े वाली स्यामी स्त्री अपने सौदे को उलट-फेर करती रहती है। वह दूसरे लोगों के साथ हँसती तथा बात-चीत करती रहती है। जब सूर्य काफी आकाश पर चढ़ जाता है और धूप हो जाती है तो बाज़ार वाली नावें चली जाती हैं।

नाव के ऊपर से पानी में बहुत कम लोग गिरते हैं और यदि कोई मनुष्य गिर भी जाता है तो वह उसके लिये एक बड़ी मामूली बात होती है क्योंकि स्यामी स्त्रियाँ बालपन ही से अपने बच्चों को तैरना सिखाती हैं। जब बच्चे बहुत छोटे होते हैं तभी से मातायें अपने बच्चों के बगल में तैरने के लिये एक बड़ा टिन बांध देती हैं। वह बच्चे को पानी में डाल दिया करती हैं। बच्चा उधर तैरता रहता है।

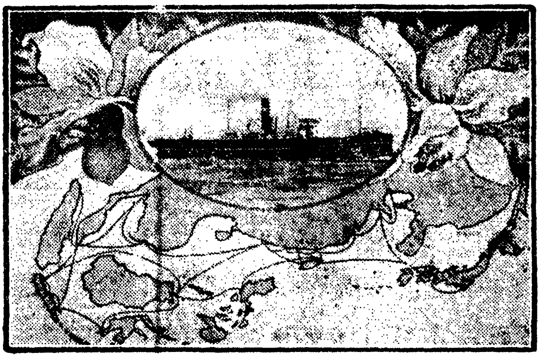
थाई देश में केवल एक बड़ी नदी है। उसे मेनाम कहते हैं। इस नदी का मुख्य नाम मेनाम चोवफ्या है। मेनाम शब्द मे और नाम शब्द से मिलकर बना है। इसका अर्थ जल की माता का होता है। यह नदी केवल जल की

माता नहीं थाई देश के स्थल की माता भी है क्योंकि थाई देश उसकी लाई हुई मिट्टी का ही बना हुआ मैदान है।

इस नदी और इसकी सहायक नदी नालों में प्रत्येक स्थान पर नावें दिखाई पड़ती हैं। थाई देश की नावें बड़ी सीधी सादी होती हैं। वह पेड़ के तने से गढ़ा खोद कर बनाई जाती हैं। यह नावें बड़ी सुन्दर बनाई जाती हैं। इसके बनाने वाले बड़े चतुर होते हैं। इन नावों की तुलना योरुपीय नावों से की जा सकती है। किसी किसी नौका की बगलें तख्तों की बनाई जाती हैं। चाई यांक वृक्ष की नावें सबसे अधिक सुन्दर तयार होती हैं। बोझ ढोने वाली नाव १२० फुट लम्बे तने की बनाई जाती हैं। इन पर सामान लाद कर बैङ्काक को लाया जाता है। खाली नावें सैकड़ों की मात्रा में भाप वाली नावों से खींची जाती हैं छोटी नौका बड़ी सफरी होती है। जब तक उसमें कोई व्यक्ति नहीं बैठ जाता वह पानी में ठीक सीधे तौर पर नहीं रहती। बड़े मोटे आदमी के बैठने पर पानी उसके किनारों तक आ जाता है। छोटे बालक इन नौकाओं पर दिन भर खेलते दिखाई पड़ते हैं।

थाई नावों के पतवार तथा डांड़ बड़े लम्बे होते हैं।

यह नाव में एक स्तम्भ में रस्सी द्वारा बंधे रहते हैं। नौका चलाने वाला मनुष्य अपने दोनों हाथों से खड़ा होकर डांड़ चलाता है। नौका में छोटी बड़ी के अनुसार कम या अधिक डांड़ होते हैं। नाव चलाने के स्वामी



सिंगापुर से वैंकांक को जाने वाला एक जहाज़।

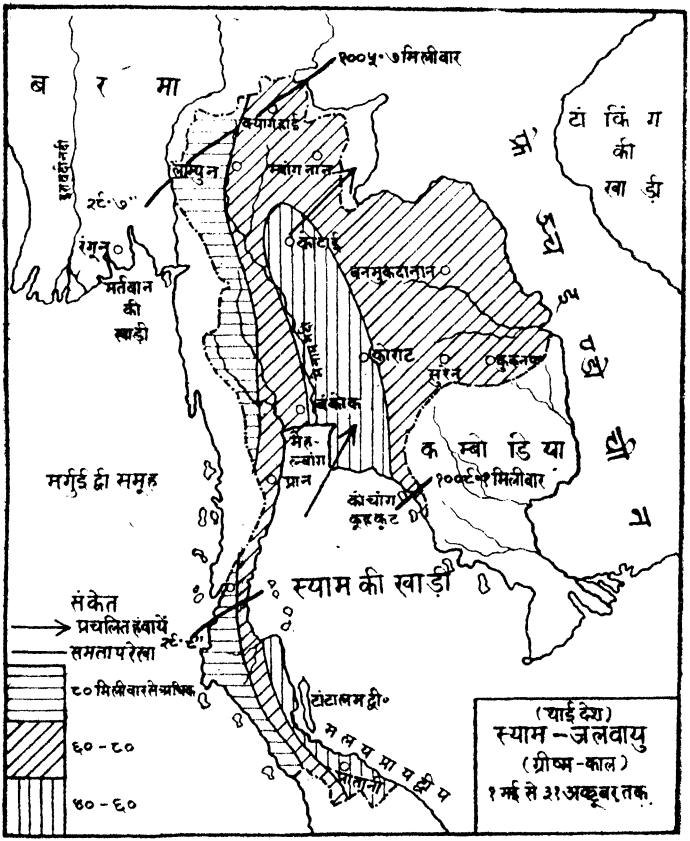
भाषा में चियाव कहते हैं। छोटी नावों में रेशमी पर्दे आदि लगे रहते हैं।

मध्यवर्ती स्याम की भूमि बड़ी नीची है। ८० मील भीतर की ओर तक ज्वार भाटे का प्रभाव नदियों में होता है और दिन में एक बार किसी न किसी समय छोटी नदियां और नहरें पानी से खाली हो जाती हैं।

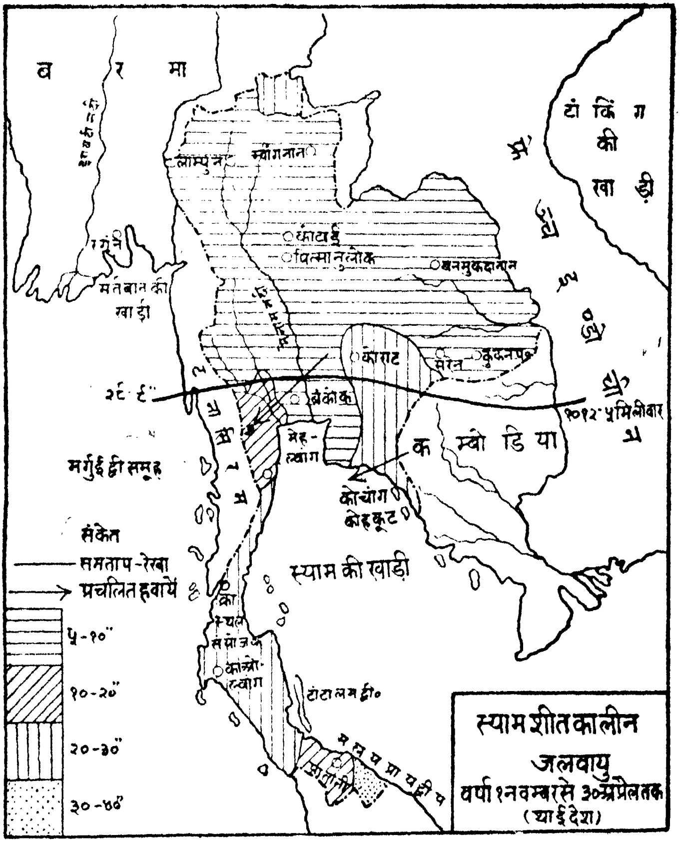
बैंकाक से मेनाम नदी के मुहाने की दूरी २० मील है और स्टीमर द्वारा यात्रा करने में ३ घंटे का समय लगता है। यह तीन घंटे की यात्रा बड़ी ही सुहावनी होती है।

नदी के किनारे की भूमि बहुत नीची है और जब ज्वार चढ़ता है तो चारों ओर मीलों पानी फैल जाता है। नदी के किनारे किनारे मीलें तथा मन्दिर हैं। नारियल के वृक्षों की कतारें लगी हैं। इस भाग में ६ फुट तक लम्बी छिपकलियां रहती हैं। यह जल, स्थल और वृक्षों पर रहा करती हैं।

पकलत नगर मेनाम नदी पर बसा है। इस नगर में एक किला है जो नदी के मार्ग की रखवाली के लिये बनाया गया है। मेनाम नदी के मुहाने के समीप पकनाम नगर है। इस नगर में किले, चुंगीघर, बन्दरगाह और मछली का शिकार करने के लिये बोट हैं। नदी के मुहाने पर मिट्टी जमी है। ज्वार के समय मुहाने की गहराई १५ फुट और भाटे के समय ३ फुट रहती है इसी कारण थाई देश के भीतर बड़े बड़े स्टीमर प्रवेश नहीं कर सकते हैं। बैंकाक पहुँचने के पहले ही जहाजों को अपने सामान का कुछ भाग बोटों पर उतार देना पड़ता है।



स्याम देश में प्रचुर वर्षा होती है। यह वर्षा गरमी की ऋतु में होती है। बंगाल की तरह यहां भी कमलों से घिरे हुये तालाब दिखाई देते हैं। ४० इंच से कम वर्षा स्याम में शायद ही कहीं होती हो।



हमारे देश की तरह स्याम भी मानसूनी या मौसमी हवाओं का देश है। जाड़े के दिनों में ये हवायें स्थल से जल की ओर लौटती हैं। इसी से इस ऋतु में स्याम देश में बहुत कम वर्षा होती है। केवल समुद्र के पास वाले भागों में कुछ वर्षा हो जाती है। फिर भी स्याम के किसी भाग में इस ऋतु में २० इंच से अधिक वर्षा नहीं होती है।



लगभग ६० साल व्यतीत हुये जब थाई लोग कम्बोडिया के निवासियों से युद्ध कर रहे थे तो उन लोगों ने पत्थर से भर कर ४ जहाज नदी के मुहाने पर डुबा दिये जिससे शत्रु के जहाज राजधानी तक न पहुँच सकें। अब वही पत्थर मिल कर एक बड़ी शिला बन गई है।

मेनाम नदी के मुहाने पर ईंट तथा पत्थर का बना हुआ एक पगोडा (बौद्ध मन्दिर) है। यह मन्दिर एक छोटे द्वीप पर है। इस मन्दिर में प्रत्येक साल जल-त्योहार मनाया जाता है जिसमें बैङ्काक और दूसरे स्थान के लोग हज़ारों की संख्या में आकर सम्मिलित होते हैं। पगोडा और मेले के दिन छोटी नावों की भीड़ लगी रहती है। लोग सुन्दर वस्त्र पहिन कर मेले में आते हैं और बौद्ध साधुओं के लिये कपड़े तथा चाय के बर्तन भेंट के लिये ले आते हैं। दिन में नावों की दौड़ होती है और रात को गाना बजाना होता है। मेले के सभी लोग प्रायः दाल, चावल का भोजन करते हैं।

देश दर्शन

बच्चे

थाई लोग मंगोल जाति के हैं। वह पीले तथा गहरे भूरे रंग के होते हैं। उनका मुँह चौड़ा समतल होता है उनकी आंखें तथा नाक छोटी और बाल बड़े होते हैं। उनकी आँखों से बदमाशी टपकती रहती है।

बच्चों का उत्पन्न होने के एक मास पश्चात् बाल मुँड़वा दिया जाता है। उसके बाद उनका नामकरण होता है। उत्पन्न होने पर बच्चों को डींग कहते हैं। डींग का अर्थ लाल होता है। बच्चे पीले रंग के लेप से पोते जाते हैं। पीले लेप से मच्छड़ बच्चों के समीप नहीं जाते हैं। कुत्ते बिल्लियां आदि भी पीले लेप से पोत दिये जाते हैं। बच्चों का बालपन में कई बार नाम बदला जाता है।

थाई बच्चे बड़े खुश होते हैं। वह आपस में बहुत कम लड़ते झगड़ते हैं। उनके सिर मुँडे रहते हैं। बालपन ही में बच्चे सिगरेट बीड़ी आदि पीना आरम्भ कर देते हैं। प्रत्येक थाई बालक अपनी निजी तम्बाकू तथा सिगरेट का कागज अपने जेब में रखता है। वह स्कूल

जाते समय सिगरेट पीते जाते हैं। स्कूल पहुँचने पर यदि सिगरेट समाप्त नहीं होती है तो वह उसे बुझा कर अपने कान के ऊपर उसी भांति लगा लेते हैं। स्कूल समाप्त होने पर वह फिर अपने सिगरेट सुलगा लेते हैं।

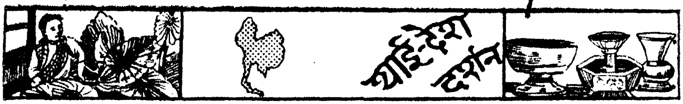
प्रातःकाल जब थाई बालक उठते हैं तो वह घर से बाहर पानी से भरे हुये बड़े बर्तन से नारियल के प्याले द्वारा पानी निकाल कर हाथ मुँह धोते हैं। वह तौलिये का प्रयोग नहीं करते हैं क्योंकि सूखी हवा के कारण उनके हाथ मुँह का पानी शीघ्र ही सूख जाता है। वह दातुवन या ब्रुश का प्रयोग दांतों में नहीं करते हैं। उनके दांत काले रंग से रंगे रहते हैं। वह अपने बालों में कङ्घा भी नहीं करते हैं। उनके सिर पर आगे की ओर थोड़े से लम्बे बाल रहते हैं जिस में गाँठ लगी रहती है।

प्रातःकाल का भोजन करने के बाद बच्चे खेलने के लिये चले जाते हैं। छोटे बच्चों को लड़कियां खेलाया करती हैं। वह बच्चों को एक ओर पीठ पर लिये रहती हैं। लड़कियाँ घर की गृहणी का खेल खेलती हैं। वह मिट्टी के बर्तन, तश्तरियाँ बना कर उन्हें धूप में सुखाती हैं। वह जड़ी बूटी, फूल और घास एकत्रित करती हैं

और उन्हें रोटी तथा मिठाई कह कर खेल खेलती हैं। वह मिट्टी की गुड़िया बनाती हैं और उसे स्वेत रंग से रंगती हैं। गुड़ियाँ छोटे पलनों में रक्खी जाती हैं और उन्हें कपड़ों से ढँका जाता है।

लड़के कीचड़ में केकड़े का शिकार करते हैं। जब उनकी टोकरियाँ भर जाती हैं तो वह एक दूसरे को गरम पीली मिट्टी से पोतते हैं और फिर पानी में गोता मार कर नहाते हैं। स्वच्छ तथा खुश होकर बाहर निकलते हैं।

थाई बच्चे अपने मास्टर, माता-पिता और बड़ों के बड़े सेवक तथा आज्ञाकारी होते हैं वह कभी भी अपने बड़ों से वादाविवाद नहीं करते हैं। वह अपने से बड़ी अवस्था तथा पद वालों का बड़ा आदर करते हैं। वह स्वतंत्र प्रकृति के होते हैं इसलिये किसी के गुलाम बन कर रहना पसन्द नहीं करते हैं।



पाठशाला

५ वर्ष तक थाई बालक नङ्गे इधर उधर खेला तथा घूमा करते हैं। वह अपनी इच्छा के अनुसार छोटी नावों को खेते और अपनी माताओं की सहायता करते हैं। वह चावल बहुत खाते हैं और सोते हैं। सिगरेट भी बहुत पीते हैं। वह परियों की कहानियाँ सीखते हैं और अपने माता पिता तथा नाचने गाने वाली से नाचगान सीखते हैं। वह रात रात भर गवैयों और भाटों का नाच गान सुना करते हैं।

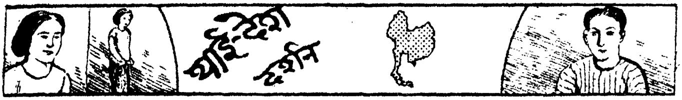
थाई राजा की आज्ञानुसार जैसे ही बच्चे कपड़े पहिनने लग जाते हैं वैसे ही वह पाठशालों में पढ़ने के लिये बैठा दिये जाते हैं पाठशाले स्वयं सेवकों द्वारा निजी घरों में खोले जाते हैं और अध्यापक सरकार की ओर से नियुक्त किया जाता है। बालक तथा बालिकाओं को बचपन में साथ साथ शिक्षा दी जाती है।

हमारे देश की भांति छोटे बच्चे फर्श के ऊपर कतारों में बैठ कर अपने पाठ को ज़ोर ज़ोर से रटा करते हैं। स्यामी या थाई भाषा उच्चारण पर निर्भर है। उच्चारण

तथा स्वर के अनुसार एक ही शब्द के कई अर्थ होते हैं। इसी कारण विदेशियों को थाई भाषा सीखने में बड़ी कठिनाई पड़ती है। पढ़ने का काम सदैव ऊँचे शब्द में ही होता है।

कुछ बड़े होने पर बालक तथा बालिकायें अलग कर दिये जाते हैं। वह बेंचों पर बैठाये जाते हैं। मामूली पढ़ना, लिखना जानने और थोड़ा गणित का ज्ञान होने पर लड़कियों की शिक्षा समाप्त कर दी जाती है। अधिकाँश बालक भी शिक्षा छोड़ कर खेती के काम में लग जाते हैं। जो लोग अपने बच्चों को सरकारी नौकरी में प्रवेश कराना चाहते हैं वह अपने बच्चों को उच्च शिक्षा देते हैं। हाई स्कूल में उन्हें विदेशी शिक्षा, विज्ञान और गणित शास्त्र की शिक्षा दी जाती है। वहां पर एक विश्वविद्यालय भी है जहाँ पर अधिक उच्च शिक्षा लड़कों को प्रदान की जाती है। धनी लड़के इङ्गलैंड तथा अमरीका आदि विदेशों को शिक्षा के लिये भेजे जाते हैं।

थाई देश में कई हज़ार ब्वाय स्काउट (बालचर) हैं। यह "यङ्ग टाइगर" (युवा शेर) कहलाते हैं। यह बड़े शूरवीर तथा साहसी होते हैं। थाई बालचर योरुप के



देशों में काम करने के लिये भेजे जाते हैं। वह प्रजा की सहायता करते हैं थाई देश का राजा बालचरों का बड़ा आदर करता है और बहुधा उनके कार्यों से प्रसन्न हो कर उन्हें पुरस्कार दिया करता है।



कला-कौशल का स्कूल। विद्यार्थी लोग सामान को सजा रहे हैं।

आजकल थाई देश के स्कूलों और पाठशालाओं में हाकी, फुटबाल, जमनास्टिक आदि दूसरे खेल खेले जाते हैं। फुटबाल का खेल देहात के गांवों में भी खेला जाने लगा है। थाई लोग फुटबाल नङ्गे पाँव खेला करते हैं।

देश दर्शन

थाई देश में सालाना खेल कूद का एक बड़ा जल्सा भी बैंकाक में होता है इस जल्से में थाई राजा अपने बड़े सभासदों के साथ सदैव जाया करता है। वहाँ पर कई हजार की संख्या में विद्यार्थी एकत्रित होते हैं। जल्सा तथा खेल बड़े समारोह के साथ होता है। वहां की प्रजा भी बड़े चाव के साथ जलसों में भाग लेती है। जलसे में साइकिल की दौड़ भी होती है और जो बालक या मनुष्य सब से धीमी साइकिल चलाता है उसे पुरस्कार दिया जाता है।

थाई बालक क्रीकेट नहीं खेलते हैं इसी कारण वहां के पाठशालाओं में भी क्रीकेट खेलने का रिवाज नहीं है।



भगवान बुद्ध की कहानी

स्यामी अथवा थाई लोग बुद्ध धर्म के मानने वाले हैं। बुद्ध धर्म की नींव डालने वाले बुद्धदेव थे। बुद्ध जी का नाम गौतम अथवा सिद्धार्थ था। यह ईसा के ५०० वर्ष पूर्व कपिलवस्तु नामक गाँव में उत्पन्न हुए थे। यह गाँव बनारस से उत्तर की ओर नेपाल की तराई में था। गौतम शाक्यवंश के थे। इनके पिता राजा थे। जब यह केवल सात वर्ष के थे तभी इनके माता की मृत्यु हो गई थी।

गौतम बालपन ही से बड़े विचारशील थे। वह बालपन से ही शिकार करने और युद्ध सम्बन्धी कामों में भाग नहीं लेते थे। इस कारण उनके मित्र, सम्बन्धी और अफसर लोगों को उनकी ओर से बड़ा सन्देह हुआ। वह राजा के पास गये और राजकुमार का समाचार बतलाया। राजा ने गौतम की परीक्षा के लिये एक दिन नियत किया। परीक्षा के दिन हज़ारों की संख्या में लोग गौतम की परीक्षा देखने के लिये एकत्रित हुए। गौतम परीक्षा में सफल हुए। वह भयानक से

भयानक घोड़े पर सवार हुए और भारी से भारी भाले को उन्होंने फेंक दिया। उन्होंने परीक्षा में एक भारी धनुष द्वारा बाण चलाया। यह धनुष इतना भारी था कि उसकी प्रत्यञ्चा चढ़ाने के लिये १००० मनुष्यों को धनुष झुकाना पड़ता था। उस धनुष की टंकोर ७००० मील तक सुनाई पड़ी थी।

१६ वर्ष की अवस्था में बुद्ध जी का ब्याह एक सुन्दर राजकुमारी के साथ हुआ। कुछ दिनों के पश्चात् उनके एक पुत्र भी पैदा हुआ। ब्याह होने और आनन्द-दायक जीवन होने पर भी गौतम को शान्ति नहीं मिली। वह बेचैन रहता था और मोक्ष अथवा निर्वाण की खोज में लगा रहता था।

एक दिन गौतम आनन्द वाटिका की ओर रथ पर सैर करने जा रहा था। उसने एक वृद्ध, दुर्बल और दुखी मनुष्य को देखा। गौतम ने सारथी से पूछा कि यह क्या मतलब है। सारथी ने उत्तर दिया राजकुमार अवस्था अधिक होने पर मनुष्य का शरीर तथा दिमाग़ निर्बल हो जाता है। इस मनुष्य को बुढ़ापे ने आ घेरा है। दूसरे दिन गौतम ने फिर एक बीमार आदमी को

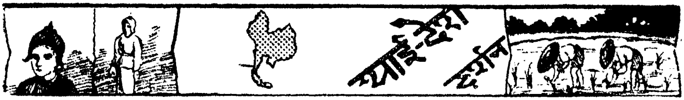
पीड़ा से कराहने देखा तो सारथी ने गौतम को समझाया कि सभी मनुष्यों को इस जीवन में पीड़ित होना पड़ता है। तीसरी बार गौतम ने एक मृतक लाश देखी जिसके सम्बन्धी बिलख बिलख कर रो रहे थे। यह पहला अवसर था जब कि गौतम को मालूम हुआ कि प्रत्येक मनुष्य को जीवन में मरना पड़ता है।

जब गौतम ने संसार के संकटों पर ध्यान दिया तो उसे बड़ा कष्ट हुआ। उसने सांसारिक कष्टों से जीवन को निवारण करने के लिये मार्ग ढूँढ़ने का निश्चय किया। उसने फकीर होकर जीवन व्यतीत करने और सांसारिक जीवन से दूर जंगल में वास करने का विचार किया।

लगभग उसी समय गौतम के पुत्र उत्पन्न हुआ। गौतम अपने पुत्र तथा स्त्री से बड़ा स्नेह करता था। परन्तु फिर भी संसार के कष्टों से जीवन को मुक्त करने का ध्यान उसे लगा था। वह एक रात को दीवे के धीमे प्रकाश में अपने स्त्री तथा बच्चे को निद्रा देवी की गोद में छोड़ घर से बाहर चल दिया। चलने के पहले वह एक बार अपने बच्चे को प्यार करना चाहता था परन्तु जाग

जाने के डर से गौतम ने उसे प्यार भी न किया। चन्ना सार्थी को साथ लेकर गौतम ने बन की ओर प्रस्थान किया।

बन में पहुँचने के बाद गौतम ने अपने सुन्दर वस्त्र तथा आभूषण उतार कर अपने सार्थी को देकर घर लौटा दिया और आप खोह तथा कंदराओं में मोक्ष प्राप्त करने के लिये घूमने लगा। वह सत्य, शान्ति और सदैव रहने वाले सुख के मार्ग की खोज में लगा था। गौतम ने उपवास व्रत किया और सभी प्रकार के शारीरिक कष्ट सहन करके योग साधन किया वह मूर्छित हो गये और पृथ्वी पर गिर गये परन्तु होश होने पर उन्हें ज्ञान हुआ कि शारीरिक कष्ट सहन करने से मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता है। गौतम ने भोजन करना आरम्भ कर दिया उस पर उसके चेले नाराज होकर गौतम को छोड़ कर चले गये। गौतम गङ्गा नदी के किनारे चला गया और गया में बट वृक्ष के नीचे बैठ कर तपस्या करने लगा। बट वृक्ष को थाई देश में पो वृक्ष कहते हैं। थाई लोग इस वृक्ष को बहुत पवित्र मानते हैं। गौतम को तपस्या की दशा में माया ने अपने अद्भुत सुख की



लालसा दिया परन्तु गौतम डिगे नहीं। ४६ दिन तक घोर तप करने के बाद गौतम को प्रकाश मिला, उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई, बुद्धि उन्हें मिली और वह बुद्ध हो गये तब से गौतम बुद्ध कहलाने लगे। गौतम को निर्वाण का मार्ग प्राप्त हो गया और उनके समस्त अज्ञान का सर्वनाश हो गया।

गौतम गया से वापस होकर बनारस गये और वहां पर उन्होंने अपना प्रचार आरम्भ किया। कहा जाता है कि उस सभा में देवताओं, पशुओं और पक्षियों ने भाग लिया था। गौतम ने बनारस में बहुत से लोगों को अपना चेला बनाया था। वह अपने धर्म का प्रचार करते हुये एक स्थान से दूसरे स्थान को घूमते रहे।

जब बुद्ध भगवान अपने पिता के नगर में पहुँचे तो उनके सम्बन्धी उनकी दशा देख बड़े प्रसन्न हुये। उन्होंने गौतम को भोजन नहीं दिया। दूसरे दिन प्रातः काल गौतम अपना प्याला ले भिक्षा की तलाश में चले। मार्ग में उनके पिता (राजा) उन्हें मिले। राजा बड़े क्रोध में थे परन्तु पुत्र के मिलते ही उनका क्रोध प्यार में बदल गया। वह गौतम को महल में ले गये।

महल के सभी लोग बुद्ध का दर्शन करने के लिये आये परन्तु उनकी स्त्री नहीं गई थी। वह अपने पति का स्वागत अकेले कमरे में करना चाहती थी। बुद्धदेव ने अपनी स्त्री के पास जाकर उन्हें दर्शन दिया। उनकी स्त्री के ज्ञानचक्षु खुले और उसे प्रतीत हुआ कि बुद्ध जी वह गौतम न थे। वह सचमुच ही ज्ञान के अवतार थे। बुद्ध जी की स्त्री भी बुद्ध भगवान की आज्ञा लेकर साध्वी बन गईं।

४५ साल तक बुद्ध भगवान अपने मत का प्रचार गङ्गा नदी की घाटी में करते रहे। आनन्द बुद्ध के चचेरे भाई तथा आज्ञाकारी शिष्य थे। बुद्ध भगवान ने उन्हें मरते समय शिक्षा दिया और कहा कि मेरे मरने के पश्चात् मत रोना। मैंने तुम्हें बतलाया है कि जो वस्तुएँ हमें सबसे अधिक प्यारी हैं उन्हें हमें छोड़ना पड़ेगा। शायद मेरे मरने के बाद तुम सोचो कि तुम्हारे गुरु चल बसे इसलिये संसार का अंत हो गया परन्तु यह न सोचना। जो मत मैंने चलाया है जो शिक्षा दी है और जो नियम बनाये हैं उन्हें ही अपना गुरु मान कर धर्म का पालन तथा प्रचार करना।

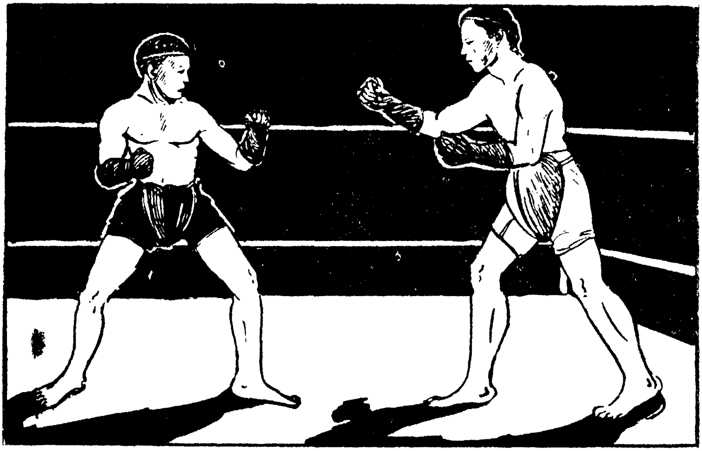
खेल तमाशे

हाकी, फुटबाल के सिवा टेनिस का खेल भी थाई-देश में खूब खेला जाता है। टेनिस का खेल उच्च तथा मध्यम श्रेणी के लोग खेलते हैं।

सालाना एक बार थाई देश में राष्ट्रीय छुट्टी होती है। उस समय सभी लोग खुशी से छुट्टी मनाते हैं और अपने यहां के स्थानीय मन्दिरों के साधुओं को नए बड़े झोलदार कुर्ते भेंट करते हैं।

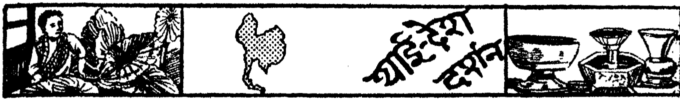
थाई देश में नावों की दौड़ का खेल भी बहुत प्रसिद्ध है। नदी के मध्य में केले के वृक्ष को डाल देते हैं और फिर उस पर एक झंडा लगा देते हैं। समस्त नाव के खेलाड़ी उस झंडे को जीतने का प्रयत्न करते हैं। हज़ारों की संख्या में छोटी नावें उस फेरेर की ओर दौड़ती हैं। दर्शकगण बड़े चाव तथा खुशी के साथ खेल का अवलोकन करते, चिल्लाते और हँसते रहते हैं। मार्ग में नाव खेने वाले अपनी कला तथा चतुरता से अपने मुक़ाबले की नौका को पीछे कर देने का प्रयत्न करते हैं। वह एक दूसरे की नौका पर कभी कूद जाते

हैं और कभी पानी में कूद कड़ते हैं। कभी कभी झंडे के समीप पहुँचने वाले दो खेलाड़ी आपस में झंडे की खींचा तानी करते पानी में गिर पड़ते हैं और फिर पानी के अन्दर खूब खींचा तानी होतो है। जा मनुष्य



थाई देश के बाक्सर (मुक्का मारने वाले लड़ाके)

झंडा लेकर वापस आ जाता है वही विजयी होता है। गर्मी इतनी अधिक रहती है कि पानी में गिरना, डूबना और कपड़ों का भीग जाना किसी प्रकार भी कष्ट-दायक नहीं होता है। कुछ ही मिनटों के भीतर कपड़े सूख जाते हैं। इस खेल में सम्मिलित होने वाले अधि-



कांश बोट टिन के बने होते हैं। प्रत्येक नाव में कई डांड़ चलाए जाते हैं। बहुत सी नावों को चलाने वाली स्त्रियां होती हैं जो चमकीले सुन्दर वस्त्र पहिने रहती हैं।

बैटिल डोर और शटलकाक के खेल भी थाई देश में बहुत खेला जाता है शाटल काक के खेल में ६ इँच बृत्त का गेंद प्रयोग होता है। खेलने वालों की संख्या तीन से सात तक होती है। सभी खेलाड़ी एक वृत्त में एक दूसरे की ओर मुँह करके खड़े होते हैं। उनमें से एक गेंद को हवा में उछालता है उसके बाद सभी लोग उसे पैर घुटने और सिर से मारते हैं। हाथ से गेंद नहीं छुवा जा सकता है। इस खेल का अंत तभी होता है जब खेलाड़ी थक करके बैठ जाते हैं। जब तक दो या दो से अधिक खेलाड़ी रहते हैं खेल जारी रहता है।

थाई लोग जुवा खेलने के बड़े शौक़ीन होते हैं। वह प्रत्येक भांति की बाज़ी लगा कर जुवा खेलते हैं। भैंसे से ले कर छोटे पतिंगों तक को आपस में बाज़ी लगाकर लड़ाया जाता है। मुर्गे, मछली, बैल, भैंसा, तीतर, झींगुर आदि को लड़ाने का खेल होता है। इन खेलों में लोग बड़े आनन्द से भाग लेते हैं। मछली

के लड़ाने का खेल एक प्याले में होता है। लड़ाने वाली मछलियां बड़ी छोटी होती हैं। वह प्रत्येक को बड़ी मज़बूती से पकड़ लेती हैं और यदि उन्हें छुड़ाया न जावे तो जब तक उनमें से एक के प्राणान्त नहीं हो जाते वह एक दूसरे को नहीं छोड़ती हैं।

मार्च के महीने में जब हवा तेज़ चलने लगती है तो पतंग लड़ाने का खेल आरम्भ होता है। पतंग लड़ाने का खेल हमारे देश की भांति ही होता है। थाई देश की पतंगों में पूँछ नहीं होती है।

नाटक खेलने का काम थाई देश में बहुत होता है। यद्यपि अब नाटक तथा स्वाँग घर योरुपीय ढंग के बन गये हैं तो भी खुले मैदान में स्वाँग भरा तथा नाटक खेला जाता है। स्वाँग में किसी प्रकार के दृश्य नहीं दिखाये जाते हैं दृश्यों का अनुमान दर्शक लोग स्वयम् मानसिक रूप से करते हैं। भारतीय ऐतिहासिक कहानियों का नाटक थाई देश में अधिक खेला जाता है। नाटक कई प्रकार का होता है। किसी नाटक में केवल स्त्रियाँ, किसी में केवल मर्द और किसी में स्त्रियाँ और मर्द दोनों मिल कर काम करते हैं। कामिक का



खेल सबसे अच्छा होता है जिसमें सभी युवा स्त्रियाँ तथा दो या तीन मनुष्य भाग लेते हैं। नाटक में प्रत्येक भांति के बाजे बजाए जाते हैं।

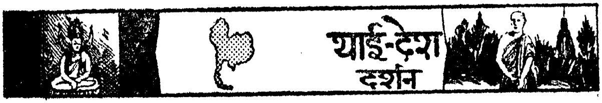


थाई देश में गोदना गोदाना वहां के लोगों का एक प्रकार का बैज है।

अब बैंकाक में कई एक नाटक तथा स्वांग घर बन

गये हैं और वहां पर आधुनिक ढंग पर खेल होता है। थाई देश के भूतपूर्व महाराज नाटक के बड़े शौकीन थे। वह स्वयम् पात्र का काम करते थे। उन्होंने कई नाटक लिखे हैं।

यहाँ के लोग गोदना के बड़े शौकीन होते हैं। वह भांति भांति के चित्र अपने शरीर पर बनवाते हैं।



साधु

स्याम देश में बहुत से साधु हैं। वह पीले वस्त्र धारण करते हैं। साधु लोग स्याम देश के लगभग सभी भाग में पाये जाते हैं। इसी कारण स्याम (थाई देश) को पीले वस्त्र का राज्य कहते हैं। थाई देश में प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में एक बार साधु बनना पड़ता है। साधु बनने का कम से कम समय तीन मास है। जब मनुष्य १६ साल का हो जाता है तो उसे साधु होकर मठ में प्रवेश करना पड़ता है। कुछ लोग तो अपना समस्त जीवन मठ में रह कर साधु रूप में व्यतीत करते हैं। जो मनुष्य साधु बनना चाहता है वह अपने सुन्दर से सुन्दर वस्त्र धारण करके मन्दिर में प्रवेश करता है और उसके सम्बन्धी लोग पुजारी को भेंट लेकर जाते हैं। भेंट में चावल, मछली, दियासलाई, फल, सिगार, घड़ी, फूलों के गमले, धूपबत्ती और दर्जनों दूसरी वस्तुएँ रहती हैं। भेंट की सारी वस्तुएँ मन्दिर के फर्श पर सजाकर रक्खी जाती हैं।

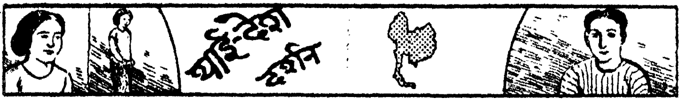
मन्दिर के अन्दर बच्चे बहुधा नौकरी किया करते हैं। बहुत से लड़के अपने पिता के साधु होने पर मन्दिर

में नौकरी कर लेते हैं। यह बच्चे पीले रंग के कपड़े पहिना करते हैं। प्रत्येक साधु की सेवा के लिये एक लड़का नौकर रहता है। साधु रुपया पैसा न तो अपने



श्रीयुत सिंग विदुर साधु होने के पहले, अपने मित्र के साथ

पास रख सकता है और न छू ही सकता है। लड़के ही अपने मालिक साधु के लिये रुपये पैसे भेंट के रूप में लेते हैं और उस रुपये पैसे को अपने मालिक साधु की सेवा में व्यय करते हैं।



प्रत्येक प्रातःकाल मठ का बड़ा घंटा बजता है और साधु लोग उठ कर अपनी भिक्षा मांगने के लिये जाते हैं। भिक्षा मांगने के लिये उनके पास एक लोहे का बड़ा प्याला रहता है। उसी को लेकर वह अपनी गली में भिक्षा लेने के लिये जाते हैं। वह भिक्षा किसी से नहीं मांगते वरन् सिर नीचा किये हाथ में प्याला लिये चले जाते हैं और लोग चावल, मछली, दाल, फल आदि वस्तुएँ प्याले में डालते जाते हैं। उच्च श्रेणी के घरों के साधुओं को उनके नातेदारों द्वारा अच्छा भोजन मिलता है।

जब साधु लोग अपना प्रातःकाल का भोजन कर चुकते हैं तो वह अपने पीले वस्त्र पहिन कर मन्दिर में पूजा के लिये जाते हैं। जो साधु काम करना चाहते हैं वह काम करते हैं। बहुत से साधु छुट्टी के समय में घर, नाव आदि बनाने का काम करते हैं और कुछ पाठशालों में पढ़ाने का काम करते हैं।

दोपहर के समय साधु लोग फिर भोजन करते हैं। संध्या समय वह लोग भोजन नहीं करते हैं। वह अपनी

भूक पान चबाकर, चाय और तम्बाकू पीकर शान्त करते हैं।

संध्या के समय साधु लोग नदी, तालाब अथवा मन्दिर की भूमि पर स्नान करते हैं। अँधेरा होते ही साधु लोग मठ के अन्दर चले जाते हैं। प्रत्येक संध्या को लगभग साढ़े छः बजे मठ के अन्दर बन्द होने का घंटा बजता है। यह घंटा मठ के ऊपरी भाग पर रहता है।

जुलाई से नवम्बर तक घोर वर्षा होती है। इन्हीं महीनों में सभी साधु संध्या समय एकत्रित होते हैं और मिलकर प्रार्थना किया करते हैं। मठ के अन्दर केवल मोमबत्ती या धुवां देने वाले दीवे जलाये जाते हैं। संध्या समय जब साधु लोग चिल्ला कर प्रार्थना करते हैं तो मेंढक, झींगुर आदि जीव चिल्लाते रहते हैं और जुगनू वायु में इधर उधर उड़ते रहते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वे सभी उस समय ईश्वर की प्रार्थना में लीन रहते हैं।

जिन कमरों में साधु लोग रहते हैं वह सफेद रंग से पुते रहते हैं। उनके अन्दर किसी प्रकार का सामान नहीं रहता है। साधु के लिये कुछ चटाइयाँ, फूल और



बुद्धदेव की मूर्ति रहती है। साधु लोग बुद्धदेव की मूर्ति की आराधना करते हैं। साधु लोग अपने पास चाय और छोटे प्याले चाय पीने के लिये रखते हैं। जब उनसे कोई मिलने जाता है तो वह उसे चाय पीने के लिये देते हैं। कुछ साधु अपने पास शतरंज खेलने का सामान रखते हैं। थाई निवासी शतरंज बहुत खेलते हैं।

प्रार्थना करने के मंत्र नारियल के बड़े पत्तों पर लोहे या हाथीदाँत के औज़ारों से लिखे जाते हैं। नारियल के पत्ते डोर द्वारा बाँधे जाते हैं। पत्तों की पुस्तक लपेट कर सन्दूक में सुरक्षित रक्खी जाती है। मंत्र ऐसी भाषा में लिखे जाते हैं जिसे मामूली लोग नहीं पढ़ सकते हैं। जो साधु मठ में अधिक समय तक रहते हैं वही मंत्र पढ़ सकते हैं।

साधु लोग नारियल के बने पंखे अपने पास रखते हैं। जब वह चलते हैं तो पंखे को अपनी आँखों के सामने रखते हैं जिससे वह संसार की वस्तुओं को न देख सकें। वह कड़ी धूप में पंखे को सिर पर लगाते हैं। साधु लोग हैट आदि सिर पर नहीं लगा सकते हैं। वह

अपने सिर के बाल, मूँछ, भौंह आदि सभी मुँडवा डालते हैं।

प्रत्येक मठ में एक मुख्य पुजारी रहता है। यह पुजारी मठ का मालिक होता है और मठ के कार्य, प्रार्थना आदि उसी की देख भाल में होते हैं। प्रधान पुजारी अपराध करने वाले साधु को दण्ड देता है। यदि अपराधी का अपराध बड़ा होता है तो वह मठ के बाहर निकाल कर पुलीस को सौंप दिया जाता है और उसे सरकारी नियम के अनुसार कठोर दण्ड मिलता है। यदि अपराधी का अपराध बड़ा नहीं होता है तो पुजारी उसे नरम दण्ड देता है और उससे दासता का काम लेता है। उसे पानी खींचने या झाड़ू लगाने का काम करना पड़ता है।

भूमि से बारह इञ्च से अधिक ऊँचाई पर सोना, संगीत सुनना, भोजन करना, अधिक सोना, चलते समय हाथ फैलाना या घुमाना, लकड़ी जलाना, भोजन करते समय चिल्लाना, सीटी बजाना और हाथी पर चढ़ना आदि काम साधुओं के लिये अपराध माना जाता है।

मन्दिर

थाई देश में बहुत से मन्दिर हैं। वहाँ पर छोटे से छोटे और बड़े से बड़े मन्दिर हैं मन्दिरों को लोग बनवा कर छोड़ देते हैं उनकी मरम्मत नहीं की जाती है। मन्दिरों के अन्दर किसी प्रकार की मूर्ति नहीं होती है जिसकी पूजा की जा सके। बुद्ध भगवान स्वयम् किसी मूर्ति की पूजा नहीं करते थे वह अपने निर्दोष जीवन के कारण निर्वाण प्राप्त करने में सफल हुये थे। इसी कारण उनकी मूर्ति की भी पूजा नहीं की जाती है। मन्दिर में पवित्र मन्त्रों द्वारा प्रार्थना की जाती है और लोगों को शिक्षा प्रदान की जाती है।

बुद्ध धर्म के अनुसार मनुष्य अपने कर्म के अनुसार पैदा होता और मरता है। यदि कर्म खराब होते हैं तो मनुष्य पशु पक्षी और कीड़े मकोड़ों का जीव पाता है और यदि कर्म अच्छे होते हैं तो उच्च श्रेणी में जन्म होता है। अच्छे कर्म के कारण ही राजा महाराजा होते हैं और अधिक अच्छा कर्म होने पर मनुष्य देवताओं का जन्म पाता है और बिलकुल निर्दोष जीवन होने पर निर्वाण अथवा मोक्ष को प्राप्त होता है जिससे उसे सदैव के लिये

शान्ति प्राप्त हो जाती है और वह आवागमन से रहित हो जाता है और फिर स्वर्ग अथवा भूमि में उसकी उत्पत्ति नहीं होती है।



मन्दिर के सुसज्जित भाग पर सर्प मूर्ति का एक दृश्य।

बुद्ध धर्म के अनुसार मनुष्य अपने जीवन में बहुत

से अच्छे कर्म और बहुत से बुरे कर्म करता है मरने के बाद उससे अच्छे तथा बुरे कर्मों की तुलना की जाती है। मन्दिरों का बनवाना और बुद्ध देव की मूर्ति स्थापित करना अच्छा कर्म माना जाता है इसी कारण लोग मन्दिर बनवाते हैं। चूंकि अच्छा कर्म जान कर सभी लोग मन्दिर बनवाते हैं इस कारण मन्दिरों के मरम्मत की आवश्यकता ही लोग प्रतीत नहीं करते हैं।

वाट थाई भाषा का शब्द है। इसका अर्थ है कि यह वह समस्त घिरा स्थान है जिसके अन्दर मन्दिर, मूर्ति, वाटिका आदि हैं। वाट मन्दिर सबसे अधिक पवित्र माने जाते हैं इन मन्दिरों के चारों (उत्तर, दक्षिण पूर्व, और पश्चिम) कोणों पर बट बृक्ष (जिसके नीचे बुद्ध भगवान को मोक्ष प्राप्त हुआ था) की पत्ती के रूप के पत्थर गाड़े जाते हैं इनके कारण बुरी आत्मा मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सकती है।

बुद्ध मन्दिरों की भूमि में प्राचीन युद्ध स्मृतियां बनाई जाती हैं। स्मृतियां भूमि पर और द्वारों, दीवारों तथा छतों पर भी बनाई जाती हैं।

मन्दिर भांति भांति के रंगो से रंगे जाते हैं। छतें

खपड़ों की होती हैं और उन पर गुम्बद बनाये जाते हैं। मन्दिरों के अन्दर नक्काशी का काम बहुत अधिक नहीं होता है। खिड़कियां आदि चौकोर आयताकार बनाई जाती हैं। मन्दिरों के अन्दर बुद्ध भगवान और उनके चेलों की मूर्तियां होती है। यह मूर्तियां इतनी सुन्दर होती है कि देखने से प्रतीत होता है मानों वह बोलना चाहती हैं। मूर्तियों की संख्या किसी किसी मन्दिर में बहुत होती है। थाई देश की प्राचीन राजधानी अयूथिया है। अयूथिया के बड़े मन्दिर में दो हज़ार से अधिक मूर्तियां हैं।

मन्दिरों के कोणों तथा दूसरे स्थानों पर नक्काशदार सींगें बनाई जाती हैं यह सींगे उस नाग के ७ फन (मुँह) की स्मृतियां हैं जिससे बुद्ध जी की रक्षा नाग ने अपवित्र आत्मा से गया के बट वृक्ष के नीचे की थी।

शाला (आराम करने का स्थान) भी थाई देश में बहुत है। मन्दिरों की भांति इनका बनवाना भी अच्छा माना जाता है। भूमि से कुछ ऊँचा एक फर्श बनाया जाता है और स्तम्भों के ऊपर छत बनाई जाती है। इन्हीं स्थानों पर यात्री लोग मार्ग में आराम

करते हैं। यह शाला नदी, नहरों और सरोवरों तथा जंगलों में बनाये जाते हैं। प्रत्येक भांति के लोग इन स्थानों पर आराम कर सकते हैं।

बैङ्काग में गोल्डेन हिल (स्वर्ण पहाड़ी) नामक सबसे अधिक प्रसिद्ध मन्दिर है। यह मन्दिर ईंटों का बना है। इसकी ऊँचाई २०० फुट है। मन्दिर के ऊपर वृक्ष घास और झाड़ियाँ उग आई हैं। देखने में पहले यह नहीं मालूम होता है कि यह पहाड़ी एक मन्दिर है और मनुष्य का बनाया हुआ है। उसमें छत पर एक स्वेत गुम्बद है जिसके नीचे हीरे की संदूक है। संदूक के अन्दर बुद्ध देव की हड्डियां हैं। यह बनारस से भारत सरकार द्वारा थाई देश भेजी गई थी। साल में तीन दिन तक इस मन्दिर में मेला होता है लोग स्मृतियों के दर्शन करने आते हैं। लोग सोने की पत्तियां और मोम की बत्तियां तथा फूल लेकर पहाड़ी पर जाते हैं और ऊपर लोहे बाड़े में बत्तियाँ लगा देते हैं। यह बाड़ा स्मृति के चारों ओर बना है। लोग बत्तियाँ जलाते और फूलों को अग्नि कुण्ड में डाल देते हैं तथा घंटों और नगाड़ों को बजाते हैं। यह घंटे तथा नगाड़े वहाँ पर लगे हैं। ऊपर

काम समाप्त करने के बाद लोग पहाड़ों के नीचे जाते हैं। नीचे एक बड़ा मेला लगता है। मेले प्रत्येक भांति के खेल तमाशे तथा वस्तुएँ रहती हैं। लोग मेले में अपना समय आनन्द पूर्वक दिन व्यतीत करते हैं।

एक दूसरे मन्दिर में बुद्ध भगवान की सोती हुई मूर्ति है। यह मूर्ति १७५ फुट लम्बी है और एक पूरा पत्थर काट कर बनाई गई है। मूर्ति ईंट की बना है और उस पर सुनहरी सीमेन्ट लगाई गई है। मूर्ति के सीने की चौड़ाई १८ फुट और पैर की लम्बाई ५ गज़ और पैर के अँगूठों की लम्बाई १ फुट है।





चोटी का मुंडन

बचपन से ही थाई बालकों के सिर के बाल बनवा दिये जाते हैं। सिर के मध्य भाग में चुटिया या चूंदी रक्खी जाती है। हमारे देश में भी हिन्दू लोग चोटी सिर में रखाते हैं। जिस प्रकार हमारे देश में चोटी रखाने और सिर मुंडन कराने का संस्कार होता है लगभग उसी भांति थाई देश के बालकों की चुटिया मुंडवाने का संस्कार होता है। चुटिया बनवाने का संस्कार नदी के किनारे होता है और वहां पर बालक के सम्बन्धी लोग साधु तथा गाने बजाने वाले, नाटक मंडली के लोग और नाई एकत्रित होते हैं। संस्कार की खुशी में नाटक खेला जाता है और भोज होता है। जब से चुटिया रखाई जाती है तब से उसे प्रति दिन साफ किया जाता, तेल लगाया तथा कंघा किया जाता है। छुरा उसमें छुवाना भी पाप माना जाता है।

चुटिया मुंड़वाने का संस्कार ग्यारह, तेरह तथा पन्द्रह साल की अवस्था में होता है। चुटिया मुंडवाने के लिये बालक के माता पिता किसी ज्योतिषी से अच्छी

तिथि नियत करते हैं और नियत तिथि पर ही चुटिया बनवाई जाती है।

चुटिया बनवाने की तिथि के समय प्रथम दिन साधु लोग एक चबूतरे पर दर्जी की भांति अपने पैर एक दूसरे पर रख कर बैठते हैं। वह एक धागे को अपने हाथ में पकड़ लेते हैं। धागे का दूसरा सिरा बालक के हाथ में रहता है। साधु लोग मंत्रोच्चारण करते हैं कि बुरी आत्मा से बालक की रक्षा हो। रक्षा करने वाली शक्ति बालक के शरीर में धागे द्वारा प्रवेश करती हुई मानी जाती है। घर और बाग के चारों ओर भी धागा बुरी आत्मा को रोकने के लिये बांधा जाता है।

दूसरे दिन जो प्रधान व्यक्ति वहाँ पर उपस्थित होता है वह कैंची से चुटिया काट देता है उसके बाद नाई आकर सिर के सारे बाल बना देता है। बाल बन जाने के बाद बालक को श्वेत वस्त्र पहिनाया जाता है और साधु उसे चबूतरे पर ले जाते हैं। लड़के के ऊपर श्वेत वस्त्र का छाता लगा रहता है। बालक के ऊपर पहले माता पिता फिर सम्बन्धी और आखिर में मित्र लोग पवित्र पानी प्यालों द्वारा डालते हैं। नहलाने के बाद

बालक को सुन्दर से सुन्दर वस्त्र पहिनाये जाते हैं। बालक एक सिंहासन पर बैठाया जाता है। बालक के दोनों ओर वायु में रहने वाली आत्माओं के लिये फल, फूल तथा भोजन भेंट के रूप में रख दिया जाता है। उसके बाद बाजा बजता है और सब लोग जुलूस बना कर बालक के चारों ओर परिक्रमा करते हैं। परिक्रमा पांच बार की जाती है। प्रत्येक मनुष्य के हाथ में एक दीवा रहता है जिसका धुआं बालक की ओर उड़ता रहता है। उसके बाद बालक के सम्बन्धी बालक को रुपया भेंट चढ़ाते हैं। यदि बालक के सम्बन्धी धनी हुये तो फिर बालक को अधिक रक़म प्राप्त हो जाती है। अंत में भोज होता है। भोज में सबसे पहले साधु लोगों को भोजन दिया जाता है। जो लोग बहुत निर्धन होते हैं वह किसी मन्दिर में जाकर अपना संस्कार मना लेते हैं और किसी साधु द्वारा चुटिया कटवा डालते हैं परन्तु धनी लोग अपने सम्बन्धी और मित्रों को निमंत्रित करने में बड़ा धन व्यय करते हैं। ऐसे समय में राजकुमारों को १,५०,००० रुपये तक प्राप्त होते हैं।

चुटिया के बालों के दो बंडल बनाये जाते हैं। छोटे

बालों के बंडल को केले के पत्ते के दोनों में रख कर नदी में बहा दिया जाता है और बड़े बाल के बंडल को जब बालक प्राबत पर्वत की तीर्थयात्रा करता है तो अपने साथ ले जाता है। प्राबत पर्वत पर बुद्ध भगवान के पांव के चिन्ह हैं। बड़े बालों का बंडल वहाँ के साधु को दिया जाता है। साधु उन बालों का झाड़ू बनाता है और उसी से बुद्ध भगवान के पाँव के चिन्ह को साफ करता है परन्तु बाल इतने अधिक एकत्रित होते हैं कि साधु उन सब का प्रयोग नहीं कर सकता इस कारण वह उन्हें आग में जला डालता है। बुद्ध भगवान के पाँव के चिन्हों की पूजा की जाती है और वहाँ पर सदैव मेला सा लगा रहता है।



घर

थाई देश के घर लकड़ी के बनाये जाते हैं। यह घर भूमि से ऊपर चबूतरों या लट्ठों पर बनते हैं। जिससे वर्षा ऋतु में जब मैदान में पानी भर जाता है तो घर पानी से बचे रहते हैं। गरमी के दिनों में पशु घर के नीचे बांधे जाते हैं। चोर लोग पशुओं को चुरा ले जाते हैं इसी कारण लोग पशुओं को अपने घर के नीचे बांधते हैं। जब मैदान में पानी भर जाता है तो लोग अपने घोड़ों को घर के अन्दर बरामदे में बांधते हैं और उसे घर के प्राणी के समान समझते हैं।

घरों को बनाने में सागौन और बांस की लकड़ी का प्रयोग किया जाता है। सागौन की लकड़ी बड़ी मज़बूत तथा सख्त होती है। उससे सील का प्रभाव नहीं पड़ता है और दीमक भी नहीं लगती है। बांस का प्रयोग अधिकतर गरीब लोगों के घरों में होता है।

थाई लोगों के घरों के फर्श सागौन के तख्तों के बनाये जाते हैं। सागौन के तख्तों के न मिलने पर बांस के बनाये जाते हैं। तख्तों के बीच वाले छेदों से हवा

ऊपर आती रहती है जिससे कमरे ठंडे रहते हैं परन्तु कभी कभी बड़ी बदबूदार हवा आती है। घर के फर्श का अधिकांश कूड़ा कर्कट भी छिद्रों द्वारा नीचे गिरा दिया जाता है जो नीचे पड़ा सड़ता रहता है।

थाई लोगों के भाग्यवश वहां पर बहुत अधिक कुत्ते होते हैं। यह कुत्ते पालतू नहीं होते और घर के कूड़े कर्कट को ही खाकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। कुत्ते हर समय भौंकते रहते हैं। यह बड़े दुबले पतले होते हैं। यह डरपोक होते हैं और किसी को काटने का साहस नहीं रखते हैं। एक बालक जिसके हाथ में लाठी हो वह सैकड़ों कुत्तों को भगा सकता है।

घरों में थाई लोग ताक नम्बर के ही कमरे बनाते हैं। जुफ्त नम्बर अशुभ माना जाता है। सबसे छोटे घर में तीन कमरे होते हैं। एक बैठने का कमरा एक सोने का कमरा और एक रसोई का कमरा होता है।

बैठने के कमरे में कुर्सी, मेज़ तथा चारपाई आदि नहीं होते हैं। वहाँ पर केवल कुछ चटाइयां होती हैं। इन्हीं चटाइयों पर लोग बैठा करते हैं। जब मेहमान आते हैं



स्याम देश का देहाती घर अक्सर बाँस का बना होता है।

तो उन्हें छोटे प्यालों में चाय पीने के लिये दी जाती है। चाय में दूध अथवा चीनी नहीं मिलाई जाती है। सुपारी लोगों को खाने के लिये दी जाती है। सुपारी का प्रयोग थाई देश में बहुत होता है और लोग अपने घरों के चारों ओर इसके वृक्ष लगाते हैं जिससे सुपारी की कमी न होवे। सुपारी का प्रयोग पान, चूना और कत्थे के साथ किया जाता है। जिस प्रकार हमारे भारतवर्ष में पान लगाकर खाया जाता है वैसे ही वहाँ भी पान लगा कर खाया जाता है। तम्बाकू का भी पान के साथ प्रयोग किया जाता है। पान खाने के कारण ही प्रत्येक थाई घर में पीचदान अवश्य रहता है। बच्चे को खेलाने वाली माँ के बगल, स्कूल में अध्यापक की कुर्सी के बगल, कचहरी में जज की कुर्सी के बगल, मन्दिर में साधु तथा पुजारी के बगल और राजा के सिंहासन के बगल पीच-दान रक्खे हुये मिलेंगे। प्रत्येक थाई पान खाता है। इसलिये वह पीचदान रखता है।

पान सुपारी खाने के कारण लोगों के दाँत कुछ समय में काले पड़ जाते हैं परन्तु वहां पर काले दांत का होना अच्छा समझा जाता है। स्यामी भाषा में कहावत



है "कोई कुत्ता भी श्वेत दांत रख सकता है।" परन्तु अब योरुपीय सभ्यता का प्रचार होने से काले दांतों के रखने का रिवाज़ कम हो रहा है।

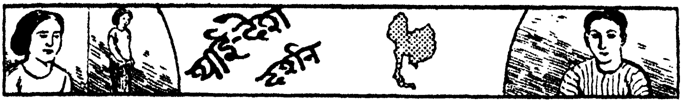
सोने के कमरे में चारपाइयां आदि नहीं होती हैं। लोग चटाइयों पर सोते हैं। सोने के कमरों में बुद्ध भगवान की कई मूर्तियाँ रक्खी रहती हैं। सोने की चटाइयों के चारों ओर मच्छरों से रक्षा करने के लिये पर्दे लगे रहते हैं। यदि मच्छरों को रोकने के लिये पर्दों का प्रयोग न किया जावे तो फिर सोना असम्भव हो जाता है।

चूंकि सूर्य पश्चिम में डूबते (मरते) हैं। इसलिये पश्चिम की ओर सिर करके सोना अशुभ माना जाता है। लोग उत्तर दक्षिण की ओर करके सोते हैं।

घरों की दीवारें सागौन या बाँस की बनाई जाती हैं। घरों की छतें खपड़ों या घास फूस की बनाई जाती हैं। गरमी के दिनों में घर का लगभग समस्त भाग गर्म हो जाता है। यदि अभाग्यवश कभी गाँव में आग लग जाती है तो फिर एक के बाद दूसरे सैकड़ों घर जल जाते हैं। आग बुझाने के लिये पानी पहुँचना कठिन

हो जाता है इसलिये कुल्हाड़ियों से काट कर मकान एक दूसरे से अलग कर दिये जाते हैं।

थाई लोग दिन में दो तीन बार स्नान करते हैं। बह अपने शरीर को तो साफ रखते हैं परन्तु उनके घर बड़े गंदे रहते हैं मकड़ी के जाले धीरे धीरे बढ़ कर रस्सी की भांति लटकने लगते हैं। दीवार कभी झाड़ी नहीं जाती है। हर कहीं गर्द जमी रहती है। घर की सफाई आग लगने पर ही होती है और गन्दगी के साथ ही साथ घर की भी सफाई हो जाती है।



भोजन तथा पहिनाव

थाई लोग रोज़ दो बार भोजन बनाते हैं। भोजन चार कोल की भट्टी पर तयार किया जाता है और पानी मिट्टी के बर्तन में उबाला जाता है। भट्ठी का रूप छोटी बाल्टी की भांति होता है भट्टी के अन्दर नीचे की ओर एक बर्तन रहता है। जिसमें चारकोल रक्खा जाता है जिसमें छिद्र रहते हैं। प्रायः यह भट्टी हमारे देश के दमकले की भाँति होती हैं। भट्टी के ऊपर बर्तन रखने के लिये स्थान बना रहता है। चावल ही प्रायः थाई लोगों का मुख्य भोजन है।

चावल को तीन चार बार पानी से धोकर चारकोल की आग पर चढ़ाते हैं। जैसे ही उबाल आ जाता है पानी चावल से निकाल कर फेंक देते हैं और भाप में चावल पक जाता है। पक जाने पर चावल थालियों में निकाल दिया जाता है। चावल के पकने के बाद बड़े बड़े श्वेत रंग के निकल आते हैं।

चावल के साथ भाँति भाँति की दालें खाई जाती हैं। दाल, साग, पात, फल और मछली भी तयार की

जाती है। सूखे मेंढक, चींटी, केखड़े और दूसरे चुने हुये कीड़े मकोड़ों का भी भोजन में प्रयोग होता है। दाल तथा तरकारी में मिर्च मसाला खूब प्रयोग होता है। थाई लोग मसाले का प्रयोग बहुत करते हैं। वह प्याज, लहसुन, अदरक आदि का भी खूब प्रयोग करते हैं। चम्मच, छूरे और काँटे का प्रयोग भोजन करने में नहीं किया जाता है। जब घर के प्राणी भोजन के लिये बैठ जाते हैं तो चावल तथा तरकारी और दाल के बर्तन बीच में रख दिये जाते हैं और प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार भोजन अपने हाथ से निकाल कर खाता है।

घर के प्रायः सभी प्राणी भोजन बनाना जानते हैं। भोजन बहुत मामूली होता है। इसलिये लोग शीघ्र ही बनाना सीख जाते हैं। भोजन सवेरे और संध्या दो बार किया जाता है। बीच में चाय पी जाती है। तम्बाकू पीते तथा पान खाते हैं। धनी लोगों के घरों में पुरुष लोग स्त्रियों से पहिले भोजन करते हैं। पुरुषों के खाने से जो बचता है उसे स्त्रियाँ तथा बच्चे खाते हैं और फिर जो कुछ शेष रह जाता है वह कुत्तों को भोजन के लिये दे दिया जाता है।

भोजन करने के पश्चात् लोग फल का प्रयोग भी करते हैं। थाई देश में कई प्रकार के फल खाये जाते हैं। फलों में आम, केला और कच्चे नारियल का प्रयोग अधिक होता है।

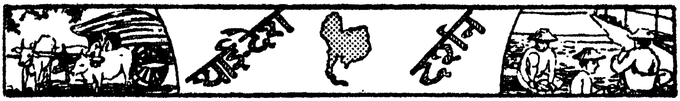
भोजन करने के पश्चात् प्रत्येक व्यक्ति अपने प्याले तथा थाली को धोकर रसोई घर के कोने में रक्खी हुई टोकरी में रख देते हैं।

थाई देश के लोगों का पहिनावा बड़ा सीधा सादा होता है। वहाँ पर फैशन का भूत नहीं है। अधिक छोटे बच्चे बिलकुल वस्त्र नहीं पहिनते वह गले में केवल एक मोती अथवा माले की गुरिया का हार पहिनते हैं। शरीर के निचले भाग में पानूँग का प्रयोग किया जाता है। यह हमारे देश की लुँगी की भाँति होता है। इसे पहिन कर थाई लोग दौड़, खेल और तैर सकते हैं। वह उसे बड़ी सरलता से पहिनते हैं उन्हें बटन लगाने तथा बंधन लगाने की आवश्यकता नहीं होती है। नगरों में धनी लोग कमीज़ पहिनते हैं। कमीज़ में कालर नहीं लगाया जाता है। कमीज़ में गले के समीप बटन लगाये जाते हैं। किसान तथा ग़रीब लोग जूते और मोजे का

प्रयोग नहीं करने हैं। नंगे पैर रहने के कारण उनके पैर के तलुओं का चमड़ा मज़बूत हो जाता है।

स्त्रियाँ अपने शरीर के ऊपरी भाग में एक बड़ी रुमाल लपेट कर पहिनती हैं यह रुमाल पाहोम कहलाती है। अब ब्लाउज़ की भांति चोलिया का प्रयोग होने लगा है। मर्द लोग तिनके अथवा फेल्ड का बना हैट लगाते हैं। यह हैट चीन अथवा योरुप से बन कर आते हैं। स्त्रियाँ हैट का प्रयोग बिलकुल नहीं करती हैं। बाज़ार में दूकान पर बैठने वाली या धूप में काम करने वाली स्त्रियां टोकरी की भाँति की टोपी लगाती हैं। उच्च श्रेणी के मर्द तथा स्त्रियां जूते और मोज़े का प्रयोग करते हैं परन्तु घर के अन्दर वह नंगे पांव रहते हैं।

पानूँग और पाहोग चमकीले रंगीन कपड़े के बनाये जाते हैं। थाई लोग बड़े अंधविश्वासी हैं। उनका विश्वास है कि सप्ताह के प्रत्येक दिन पर किसी न किसी ग्रह का प्रभाव है इसलिये वह ग्रहों को खुश रखने के लिये उसी प्रकार के कपड़े पहिनते हैं। बहुत धनी लोग इस रिवाज को मानते हैं। रविवार को सूर्य को प्रसन्न रखने के लिये वह लाल रेशम तथा लाल हीरे का प्रयोग



करते हैं। सोमवार को स्वेत वस्त्र तथा स्वेत मणि पहिना जाता है। मंगलवार को कम लाल तथा मूँगे का प्रयोग किया जाता है। बुधवार को हरा रंग, बृहस्पतिवार को पट्टियां तथा बिल्ली की आंख, शुक्रवार को बैंजनी रंग तथा नील मणि और शनिवार को गहरा नीला रंग का वस्त्र तथा मणि का प्रयोग होता है।



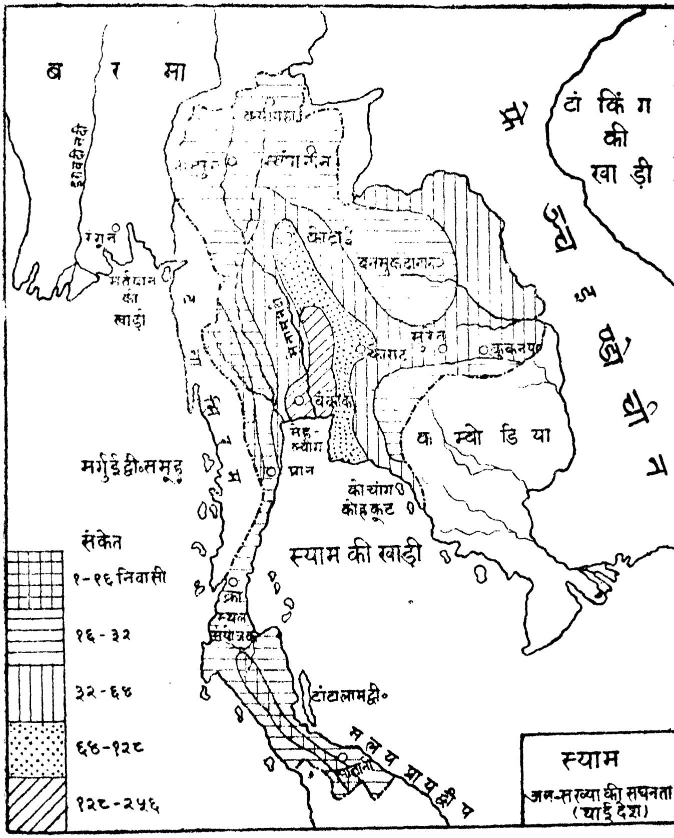
देश दर्शन

मछली मारना

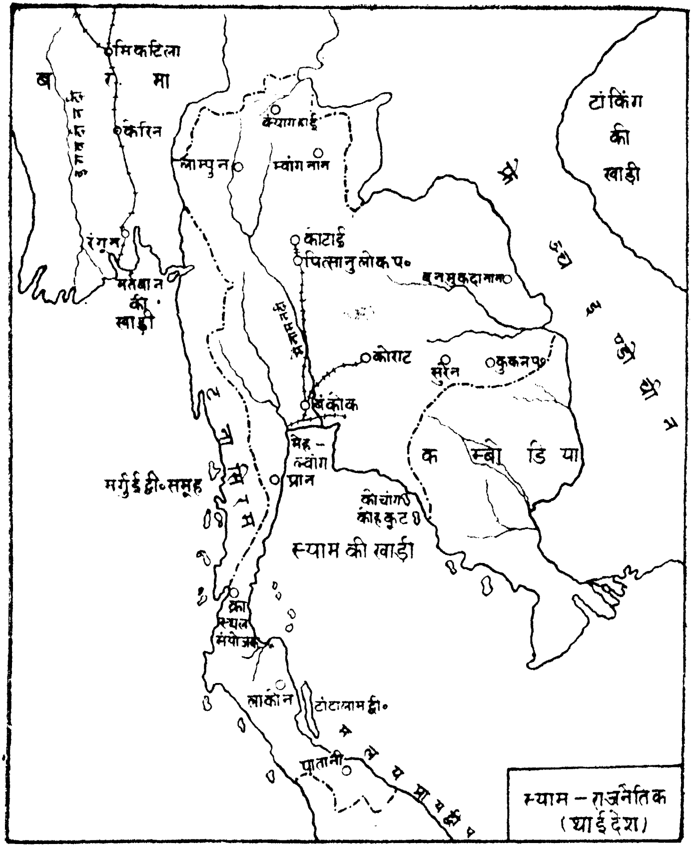
थाई देश की खाड़ियों, नदियों तथा नहरों में मछलियां बहुत पाई जाती हैं। थाई लोग बुद्ध धर्म के मानने वाले हैं। बुद्ध धर्म का यह मुख्य नियम है कि लोग जीव हत्या न करें परन्तु जहां तक मछली मारने का सम्बन्ध है थाई लोगों ने बहाना निकाल लिया है। वह कहते हैं कि वह मछली को मारते नहीं है वरन् उसे पानी के बाहर निकाल लेते हैं और वह अपनी प्राकृतिक मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।

चावल के बाद मछली ही थाई लोगों का मुख्य भोजन है। मछली पका कर सुखा कर कच्ची और अचार बना कर थाई लोग चावल के साथ खाते हैं।

मछली पकड़ने के लिये भांति भांति के जालों का प्रयोग किया जाता है। छिछले पानी में बांस गाड़ दिये जाते हैं। यह बांस कभी कभी चौथाई मील तक लगातार गाड़े जाते हैं। इन बांसों के बाद एक चौकोर ६० फुट लम्बा चौड़ा वर्गाकार स्थान होता है। मछलियां पानी के साथ बांसों के मध्य होकर वर्गाकार स्थान में चली



अधिक गरम और जंगलों से घिरा होने से स्याम देश घना नहीं बसा है। सब से घनी आबादी मीनाम के निचले भाग में है। बड़े बड़े नगर कम हैं। केवल बंकाक की जनसंख्या १ लाख से ऊपर है। दूसरे नगर बहुत छोटे हैं। इनमें कुछ बहुत पुराने हैं।



स्याम देश दो शक्तिशाली साम्राज्यों (ब्रिटिश और फ्रेंच) के बीच घिरा होने पर भी स्वाधीन रहा है। यहाँ के लोग बड़े स्वाधीनता प्रेमी होते हैं। वे अपने देश को थाई या स्वाधीन कहते हैं। हाल में यहाँ के लोगों ने फ्रेंच लोगों से उस भाग को लेने का प्रयत्न किया जो इनसे छिन गया था।

जाती हैं जहाँ से निकलना उनके लिये कठिन हो जाता है। दो तीन दिन के बाद उस स्थान से जाल द्वारा मछलियाँ मारी जाती हैं।

प्लाई टू नामक मछली थाई देश में बहुत होती है। यह मछली छिछले पानी में बहुत अधिक उत्पन्न होती है। जब यह लगभग ४ इञ्च की हो जाती है तो खुद समुद्र में घूमने लगती है। दूसरी बड़ी मछलियां उनका पीछा करती हैं और उन्हें पकड़ कर खाती हैं। यह मछलियाँ बहुत ज्यादा पकड़ी जाती हैं और टोकरियों में भरकर भेजी जाती हैं। प्लाई टू मछली को थाई लोग कहते हैं कि खाने में बड़ी स्वादिष्ट होती है।

साल में एक बार स्याम देश की खाड़ी के पश्चिम की ओर का पानी कम होता है और वहाँ पर सिक्वड मछलियाँ बहुत ज्यादा एकत्रित होती हैं। लोग अपनी अपनी नावें लेकर जाते हैं और भर भर कर वापस आते हैं। इन्हें लोग उबाल कर खाते हैं।

थाई लोग शार्क मछली का शिकार बहुत करते हैं। इनके पकड़ने के लिये मज़बूत रस्सी लोहे के कांटे और

मांस के टुकड़ों का प्रयोग करते हैं शार्क मछलियाँ बड़ी होती हैं और उनसे अधिक मांस प्राप्त होता है।

लम्बे लम्बे लट्ठे छिछले समुद्रों में गाड़े जाते हैं जिनमें छोटी सीपदार मछलियां चिपक जाती हैं। बाद में यह लट्ठे उखाड़ लिये जाते हैं और सीपदार मछलियां निकाल ली जाती हैं।

साफ पानी में रहने वाली मछलियों को पकड़ने के लिये कई प्रकार के सामान प्रयोग किये जाते हैं। जाल, भाले, टोकरियां, कांटे आदि का प्रयोग उन्हें पकड़ने के लिये किया जाता है।

नहरों में मछलियों को पालने के लिये सेवार घास लगाई जाती है। नहर से पटरियों में दोनों ओर पानी में सेवार घास इतनी अधिक लगा दी जाती है कि नाव के चलने के लिये कठिनता से स्थान रहता है। सेवार के नीचे मछलियां अधिक मात्रा में रहती हैं। साल में एक दो बार सेवार में जाल लगा कर मछलियां पकड़ी जाती हैं। जहां पर मन्दिर होते हैं उसके सामने मछलियों के पकड़ने की आज्ञा नहीं है। मन्दिर के सामने

किसी प्रकार के जीव की हत्या नहीं की जा सकती है। इसकी सरकारी रूप से मनाही है।

मछलियों के शिकार करने के लिये एक गोलाकार हाथ के जाल का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार के प्रयोग के लिये प्रति जाल १० शिलिंग के हिसाब से कर देना पड़ता है। शिकारी अपनी नाव पर खड़े जाल डालता है और मछली फंसाता है।

नमकीन तथा साफ पानी दोनों में झींगा मछली बहुत अधिक पाई जाती है। झींगा मछली पकड़ने के लिये एक बड़ा जाल लेकर दो नावें नदी में तट के भीतर की ओर जाती हैं और भीतर जाकर नावें अलग हो जाती हैं। जाल पानी में डाल दिया जाता है उसके बाद नावें तट की ओर जाल को घसीटती हुई लौटती हैं। इस प्रकार जाल में बहुत ज्यादा झींगा मछली पकड़ ली जाती हैं। झींगा मछलियों को खाने के योग्य तयार करके सिंगापुर, हाँगकांग, जावा, मलय प्रायद्वीप और चीन भेजा जाता है।

रात को छोटी नावें नदी या समुद्र में खेई जाती

हैं। मछलियाँ भय के कारण उछलती हैं। नाव के आगे और बगल में जाल लगा रहता है जब मछलियाँ उछलती हैं तो जाल में फँस जाती हैं।

बहुत सी मछलियाँ कीचड़ में रहती हैं कुछ मछलियाँ तट पर आकर रहती हैं जो अपने ऊपर पानी फेंक कर कीड़े मकोड़ों को गिरा कर अपना भोजन प्राप्त करती हैं।



खेत जोतने का संस्कार

थाई देश में धान बोने के पहले सालाना धान खेत जोतने का संस्कार किया जाता है। कृषि सम्बन्धी एक आवश्यक संस्कार है। यह हल जोतने का त्योहार है। जब तक यह त्योहार समाप्त नहीं होता कोई भी मनुष्य धान के खेत को नहीं जोतता है।

थाई देश में वर्षा का आरम्भ मई के दूसरे सप्ताह में होता है। इसलिये मई मास के आरम्भ में राजा के ज्योतिषी लोग जोतने के लिये साइत नियत करते हैं। इस संस्कार में अच्छी उपज होने के लिये एक प्रकार की ईश्वर से प्रार्थना की जाती है। साइत निश्चित हो जाने पर थाई लोग उसकी प्रतीक्षा करते हैं।

प्राचीन काल से ही यह रिवाज चला आ रहा है कि यह संस्कार राज्य' घराने का कोई पुरुष या कृषि मन्त्री करता है। वह कुछ कर पाता है। जब वह संस्कार करता है तो राजा का मुकुट पहिनता है।

यह संस्कार नगर के बाहर एक बनाये हुये निश्चित खेत में होता है। खेत को अच्छी तरह से जोता जाता है

और उसके मध्यवर्ती भाग में तीन लकड़ी के सजाये हुए स्तम्भ गाड़े जाते हैं। एक ओर राजा के लिये एक मंडप बनाया जाता है जिसमें राजा अपने दरबारियों के साथ बैठता है। प्रतिवर्ष राजा संस्कार में अवश्य मौजूद रहता है। मंडप के दूसरी ओर एक मन्दिर बनाया जाता है। जिसमें बौद्ध तथा हिन्दू मूर्तियाँ रहती हैं जिनकी पूजा उनके पुजारी करते हैं। यह मन्दिर एक दिन पहले बनाया जाता है और संस्कार के पहले वाली रात को इसकी भली भाँति देख भाल की जाती है। खेत के चारों ओर स्वेत सूत बँधा रहता है जिससे पुजारी लोग मन्त्रों की शक्ति से खेत की उपज की रक्षा करते हैं।

संस्कार के दिन कृषि मन्त्री बहुमूल्य नये वस्त्र तथा आभूषण धारण करके खेत को जाता है। वह वस्त्र के ऊपर स्वेत जाल का चोगा पहिनता है। इसमें चाँदी सोने का काम किया रहता है। उसके जाने के पहिले उसके सम्बन्धी तथा मित्रगण उससे मिलते हैं। नियत समय पर वह सजाई हुई चौकी अथवा कुर्सी पर बैठा कर आठ मज़बूत मनुष्यों के कन्धे पर खेत में जाता है। उसके साथ साथ देश के प्रसिद्ध गण अनोखी वस्तुएँ



लेकर जाते हैं। अनोखी वस्तुओं में राजा का छाता, एक बड़ा पंखा, एक तलवार (जो श्वेत फूलों के हार से सजी रहती है) और एक छोटी स्वर्ण गाय रहती है। गाय के गले में सुगंधित फूलों की माला रहती है।

राज्य-कुर्सी के सामने बाजा बजाने वाले अपने वस्त्र पहिने डटे रहते हैं। जुलूस में सैनिक अपने प्राचीन भेष में, पुजारी पीले वस्त्र में, उच्च श्रेणी के लोग सुनहरे वस्त्र में और प्रत्येक भांति के स्त्री पुरुष सुन्दर रंगीन वस्त्र पहिने रहते हैं। कुर्सी के पीछे और अधिक पीले वस्त्र वाले पुजारी तथा ज्योतिषी लोग रहते हैं।

खेत के अन्दर लकड़ी का एक हल रहता है जो फूलों तथा वस्त्रों से सजाया रहता है। जुएँ और हरिस के कोण बहुत सुन्दर बनाये जाते हैं। जहां पर जुवाँ हरिस से जुड़ता है वहाँ पर सजाई हुई मूर्ति बनी रहती है।

जब कृषि मन्त्री स्थान पर पहुँचता है तो उसे तीन कपड़े के टुकड़े दिखाये जाते हैं। वह एक ही भाँति सफाई से तह किये रहते हैं और एक ही भाँति दिखाई पड़ते हैं परन्तु उनकी लम्बाई में अन्तर रहता है।

यदि मन्त्री बड़े कपड़े को लेता है तो उसका अर्थ यह माना जाता है कि वर्षा कम होगी और लोग अपने पानूँग को नीचे पैर के घुटनों पर गिरा लेते हैं और यदि मन्त्री सबसे छोटे टुकड़े को लेता है तो उसका अथ यह होता है कि वर्षा अधिक होगी इसलिये लोग अपने पानूँग को पैर की गांठ के ऊपर कर लेते हैं। चुनने के बाद मन्त्री कपड़े को अपनी कमर में बाँध कर हल की मुठिया पकड़ता है और बैलों को हांकने के लिये एक बड़ा सोंटा लेता है। कृषि मन्त्री नौ चक्कर हल चलाता है। बैलों के आगे ब्राह्मण पुजारी पवित्र पानी डालते हुये चलते हैं। तीन बार घूमने के बाद उच्च श्रेणी की बूढ़ी स्त्रियां सुन्दर वस्त्र पहिना कर बीज बोती हैं जो वस्त्र उन्हें दिये जाते हैं वह उनको सेवा के लिये दिये जाते हैं और लौटाये नहीं जाते हैं। वह अपने कंधों पर एक सुनहरा डंडा लिये रहती हैं जिसमें दो टोकरियां बीज भरा लटकती रहती हैं। एक टोकरी सुनहरी और दूसरी चांदीदार होती है। टोकरियों में मन्त्रों से पवित्र किया बीज भरा रहता है स्त्रियाँ दायें बायें छींटती जाती हैं। दूसरे तीन चक्करों में बीज बोया जाता है। लोग अपने



बीजों में मिलाने के लिये पवित्र बीज को बिनते जाते हैं इससे अच्छी उपज होने की आशा की जाती है।

बीज बोने के बाद मन्त्री फिर तीन चक्कर हल जोतता है उसके बाद पवित्र सूत का बंधन तोड़ दिया जाता है और लोग बीज बिनने के लिये दौड़ पड़ते हैं।

उसके बाद बैल राजा के मंडप के सामने जुए से अलग करके लाये जाते हैं वहाँ पर केले की पत्तियों की बनी हुई टोकरियों में धान, मकई, घास और दूसरे अन्नों के बीज रक्खे रहते हैं। जिस बीज को बैल खाते हैं उसी दाने के उपज की अधिक आशा की जाती है। इस प्रकार थाई किसानों को उस दिन मालूम हो जाता है कि वर्षा कैसी होगी और किस प्रकार के अनाज की उपज अधिक होगी।

उसके बाद कृषि मन्त्री फिर जुलूस के साथ उसी भाँति बाजे के साथ वापस आता है। किसी समय में स्यामी लोग इस प्रथा पर पूर्ण विश्वास करते थे परन्तु अब शिक्षा के साथ साथ विश्वास कम हो रहा है।

झूला संस्कार

हल जोतने के संस्कार की भांति ही थाई देश में झूला संस्कार भी मनाया जाता है। यह संस्कार धान की फसल के तयार होने तथा कट जाने के पश्चात् होता है। इस संस्कार में राज्य दर्बार के प्रधान अफसर भाग लेते हैं। इस संस्कार के लिये साइत राज्य दरबार की ओर से नियत की जाती है। इस संस्कार के समय एक बड़ा जुलूस निकाला जाता है। यह उत्सव बैङ्काक नगर में मनाया जाता है।

बैङ्काक नगर के मध्यवर्ती भाग में हिन्दू शिव मन्दिर है वहां पर सागौन की लकड़ी का बना हुआ एक बड़ा झूला है जो ८० फुट ऊँचा है।

कहा जाता है कि शिव भगवान जो संसार को भोजन देते हैं वह अपने सामने लोगों को झूलते हुये देख कर खुश होते हैं। इसलिये प्रति वर्ष एक दिन झूला उत्सव मनाया जाता है। इस उत्सव में बड़े बड़े पदाधिकारी लोग भाग लेते हैं। पदाधिकारी गण छोटे छोटे देवता बनते हैं।



नियत दिन को उच्च श्रेणी का प्रधान अफसर नगर के किसी बड़े मन्दिर में जाता है। वह देवता का स्वांग भरता है। उसके साथ साथ और दूसरे अफसर छोटे देवगणों का स्वांग भरे रहते हैं। यह सब लोग एक जुलूस में नगर होकर झूले के समीप जाते हैं।

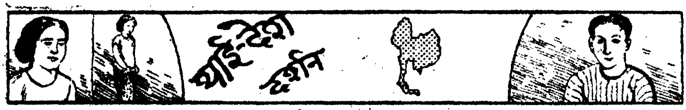
प्राचीन समय में प्रधान अफसर को राजा की ओर से नगर में उस दिन कर लेने की आज्ञा हो जाती थी। प्रधान अफसर के सरकारी लोग खूब कर लेते थे। नागरिक लोग कर देने से इंकार करते थे। इस पर काफी झगड़ा होता था और मज़बूर होने पर ही लोग कर देते थे।

झूले के समीप जब जुलूस पहुँचता है तो प्रधान अफसर की अगवानी करते हैं और उसे एक मण्डप में ले जाते हैं जहाँ पर एक प्राचीन कुर्सी रक्खी रहती है। प्रधान उसी कुर्सी पर बैठता है और अपने पैर लकड़ी के उठे डंडे पर फैला देता है। यह लकड़ी का उठा हुआ डंडा इस लिये आवश्यक होता है कि यदि प्रधान के पैर संस्कार के समय पृथ्वी से छू जाते हैं तो उत्सव की

पवित्रता जाती रहती है और शिव भगवान अप्रसन्न हो जाते हैं।

प्राचीन समय यदि प्रधान भूल कर अपने पैर भूमि पर रख देता था तो ब्राह्मण लोग उसे मारते पीटते थे और उसके कपड़े आदि छीन लेते थे परन्तु अब पुलीस उन्हें ऐसा करने से रोकती है। फिर भी यदि प्रधान ऐसा भूल से कर डालता है तो बहुत काल तक बदनाम रहता है।

जब प्रधान झूले पर बैठ जाता है तो उसके चार साथी झूलने के पैर रखने वाले भाग तक उठाये जाते हैं। यह भूमि से लगभग १२ फुट ऊँचा होता है। तब झूला झुलाया जाता है और नाच गान होने लगता है। झूले से कुछ दूरी पर एक बांस गड़ा रहता है जिसके सिरे पर एक छोटी रुपये से भरी थैली लटकती रहती है। झूलने वाले इस थैली को अपने दांत से पकड़ कर ले जाने का प्रयत्न करते हैं। यदि वे असफल होते हैं तो दर्शक लोग उनका मज़ाक उड़ाते हैं जब वह थैली को दांत से उठा ले जाते हैं तो खुशी मनाई जाती है क्योंकि



ऐसा होने से शिव भगवान का प्रसन्न होना माना जाता है।

झूला झुलाने वाले धातु की शेषनाग के सिर की भांति टोपियां पहिन कर नागों का स्वांग भरे रहते हैं। कहते हैं कि नाग पानी पर अधिकार रखते हैं और पानी से ही पृथ्वी फलदार होती है। झूले से नीचे आते समय झूले वाले अपनी टोपियों में पानी भर लेते हैं और उसे दर्शकों पर छिड़कते जाते हैं। यह पानी जिन लोगों पर पड़ता है वह अपने को भाग्यशाली समझते हैं।

झूले के समाप्त होने पर जुलूस फिर उसी प्रकार अपने स्थान को वापस हो जाता है। तीसरे दिन फिर उसी प्रकार उत्सव मनाया जाता है उसके बाद शिव भगवान प्रसन्न हो जाते हैं।

शिव भगवान के मन्दिर में भी एक छोटा झूला रहता है जिसे ब्राह्मण तथा बच्चे शिव जी को प्रसन्न करने के लिये झुलाया करते हैं।

धान

थाई देश का मुख्य अनाज धान है। यह थाई लोगों का मुख्य भोजन है। राजा से लेकर गरीब से गरीब



धान के खेत की जोताई।

आदमी इसको खाता है। घोड़े, कुत्ते और बिल्लियाँ भी इसे खाती हैं। धान से शराब तथा स्पिरिट भी बनाई जाती है। चावल उबाल कर, भून कर और पीस कर

खाया जाता है। चावल की तरकारी, शोर्बा और दाल आदि बना कर प्रयोग किया जाता है। चावल लगभग सभी थाई त्योहारों में प्रयोग किया जाता है। चावल

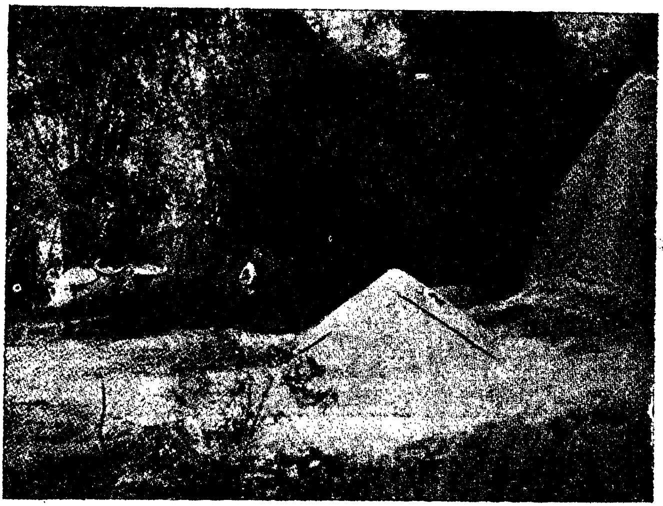


धान के पौदे लगाये जा रहे हैं।

की उपज के आरम्भ और अंत में खास छुट्टियाँ मनाई जाती हैं।

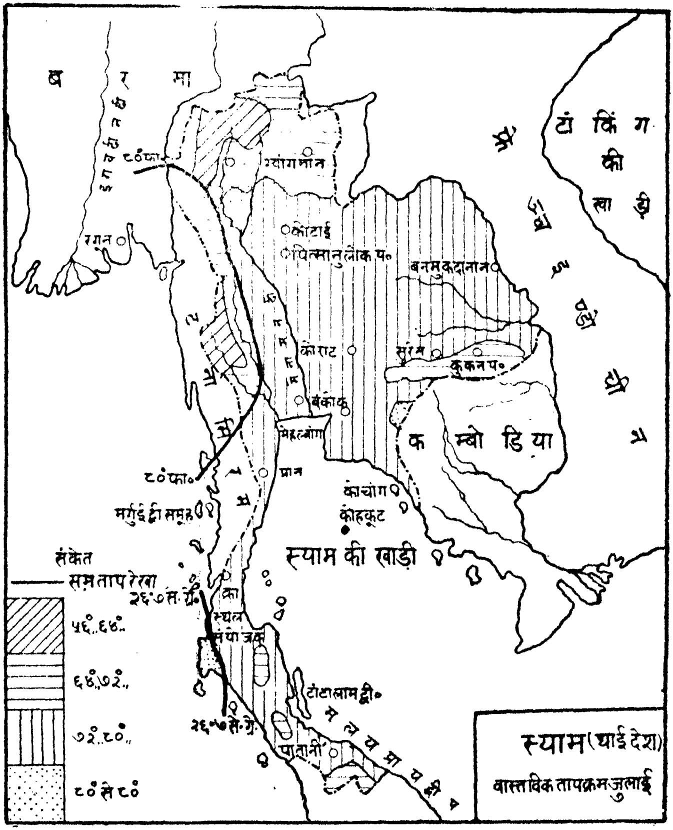
थाई देश की समस्त भूमि राजा की मानी जाती है परन्तु कोई भी व्यक्ति जो धान की खेती करना चाहता

है वह जंगल में जाता है और वहां घास तथा वृक्षों को जला कर खेत धान बोने के लिये तयार करता है। उसे इस प्रकार के खेत के लिये पहले पहल किसी प्रकार का लगान नहीं देना पड़ता है। थाई देश के धान के खेत

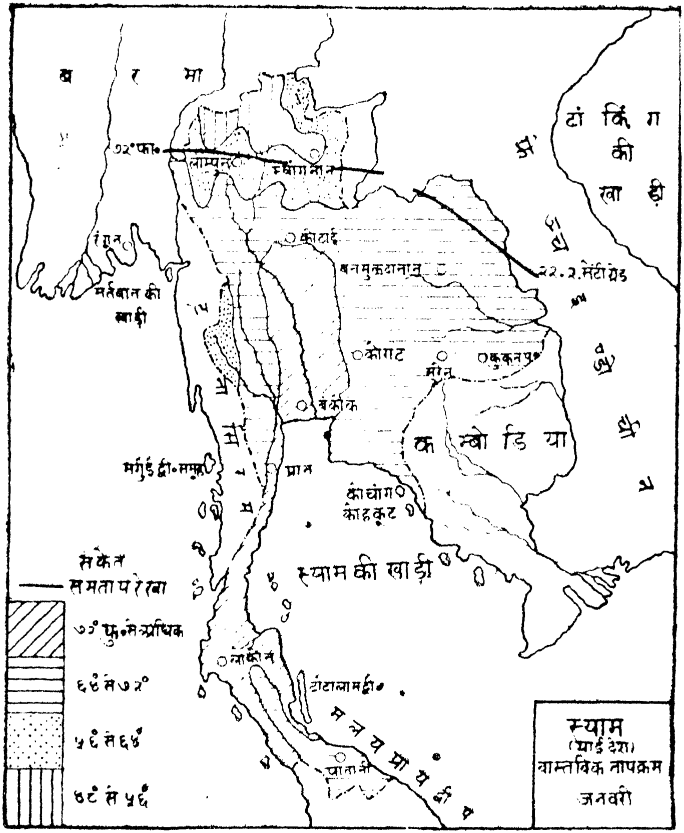


धान की राशि

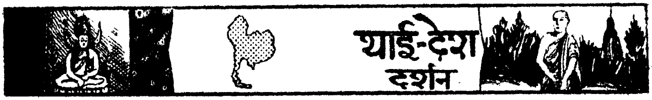
बहुत बड़े होते हैं। मामूली खेत ८ एकड़ का होता है। ८ एकड़ भूमि में इतना चावल पैदा होता है जिससे चार पांच मनुष्यों के कुटुम्ब का गुजर भली भांति हो सकता है।



स्याम देश दक्षिणी मद्रास के अक्षांशों में स्थित है। विषुवत रेखा के पास होने से यहां गरमी अधिक पड़ती है लेकिन ऊँचे भागों का तापक्रम कुछ कम हो जाता है। समुद्र भी यहाँ की गरमी को कुछ कम कर देता है। लेकिन हवा में अधिक नमी होने के कारण यहां की गरमी कम होने पर भी असह्य हो जाती है। स्याम का असली तापक्रम निचले भागों में प्रायः उसी तरह का है जो यहां की समताप रेखाओं से प्रगट होता है। केवल ऊँचे भागों में उँचाई के कारण तापक्रम कुछ कम है।



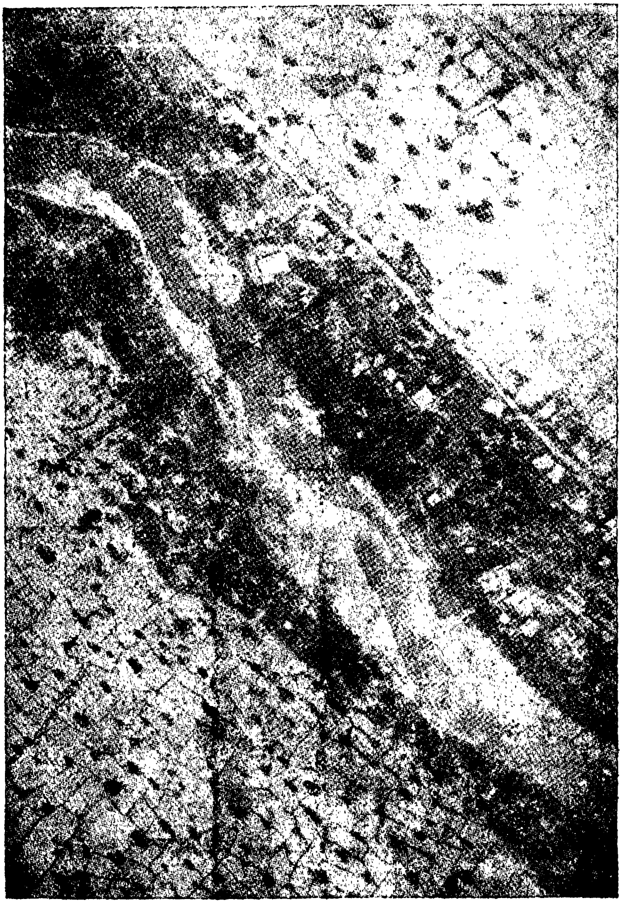
जनवरी स्याम देश में भी सरदी का आदर्श महीना है। लेकिन त्रिपुवत रेखा के पास होने से यहां प्रायः सभी भागों में हमारे दक्षिण-भारत की तरह गरमी पड़ती है।



थाई देश की भूमि का क्षेत्रफल २ लाख बर्गमील है। लगभग २० हज़ार बर्गमील में धान की खेती होती है।

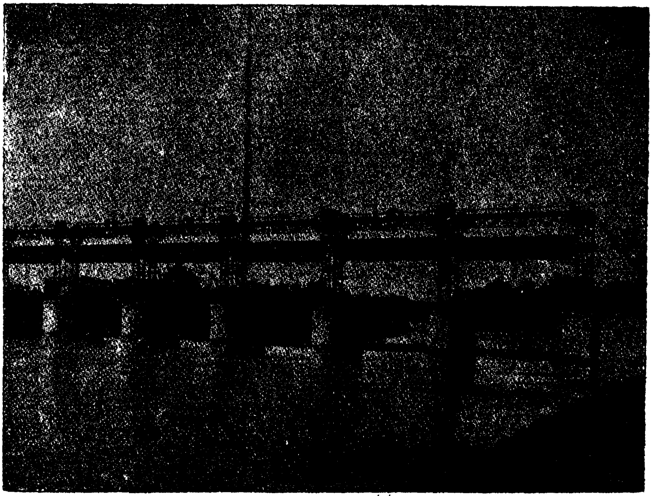
खेत को साफ करने के बाद किसान वर्षा की प्रतीक्षा करता है। जब पानी बरस जाता है और भूमि मुलायम हो जाती है तब हल से खेत जोते जाते हैं। हल चलाने का काम भैंसे करते हैं। हल प्राचीन ढंग के प्रयोग किये जाते हैं। हलों से २ इंच गहरी तथा चार पांच इंच चौड़ी भूमि खोदी जाती है। जोतने के बाद हेंगे से खेत की भूमि बराबर की जाती है। हेंगा बांस का चौकोर बनाया जाता है उसमें कुछ लकड़ी के दांत बने रहते हैं। जोतने और हेंगने से खेत की मिट्टी धान बोने के योग्य तयार हो जाती है।

जहां पर अधिक नमी रहती है वहीं पर धान की खेती हो सकती है। थाई देश के किसान धान की खेती के लिये पहले वर्षा पर और फिर नदियों पर पानी के लिये निर्भर रहते हैं। नदियों में बाढ़ आती है तो धान के खेत पानी से भर जाते हैं। बाढ़ में कछारी मिट्टी भी पड़ जाती है।



विश्नुलोक ज़िले में नदी का दृश्य। धान के खेतों के बीच बीच में पेड़ खड़े हैं।

धान कई प्रकार का होता है थाई देश में लगभग २० प्रकार का धान उगाया जाता है। मुख्य मुख्य धानों को थाई लोग दो भागों में बांटते हैं। एक तो वह जो खेतों में उगाया जाता है और दूसरे प्रकार का धान बागों में उगाया जाता है।



सिंचाई का (राम) बाँध।

खेतों में धान उन्हीं स्थानों में बोया जाता है जहाँ पर वर्षा अधिक होती है। धान पानी के साथ ही साथ

बढ़ता है। थाई देश में धान १२ घंटे में एक फुट तक बढ़ता देखा गया है। थाई देश के धान के पौदों की ऊँचाई १० फुट तक होती है। खेत में बोये जाने वाले धान की अधिक परवाह नहीं करनी पड़ती है।

बाग़ के बोये जाने वाले धान की अधिक देख भाल करनी पड़ती है। पहले यह घने छोटे छोटे खेतों में बोये जाते हैं जब यह कुछ इंच बड़े हो जाते हैं तो उखाड़ कर दूसरे स्थानों पर लगाये जाते हैं। हमारे देश में यह लाएन वाले धान कहलाते हैं। एक मनुष्य तीन दिन में एक एकड़ भूमि में धान के पौदे लगा सकता है।

धान की कटाई खेत की दशा पर निर्भर करती है। यदि खेत का पानी सूख जाता है तो हँसिये से धान काटा जाता है और बंडलों में बांधा जाता है और यदि पानी भरा रहता है तो लोग छोटी नावों पर जाते हैं और धान की बाल काट काट कर नाव के मध्यवर्ती भाग में रक्खी टोकरी में डालते जाते हैं। इस प्रकार की कटाई में बहुत सा धान पानी के अन्दर गिर जाता है। धान खेत के अन्दर खड़े सांचों पर सुखाया जाता है। जब तक धान सूखता रहता है उसकी रखवाली

थाई बालक करते रहते हैं। वह पतली रस्सी के बने हुये गोफन में कीचड़ या ढेले रख कर चिड़ियों को मारते हैं। जब सूख जाता है तो धान के घने खेत में जला दिये जाते हैं।

धान माँडने के लिये गोबर से लीप कर खलिहान की भूमि तयार की जाती है। बीच में एक लकड़ी का लट्ठा गाड़ दिया जाता है। दो या दो से अधिक भैंसे से उसमें दायँ चलाये जाते हैं। दायँ चलाकर धान माँडने का काम उजाली रात में होता है उस रात को बच्चे नहीं सोते हैं और वह खेल तमाशे करते रहते हैं। उसके बाद पियाल दाने से अलग किया जाता है। पियाल निकालने के बाद हवा में धान के दाने को टोकरियों से ओसा कर दाने से भूसे तथा कूड़े कर्कट को अलग करते हैं। दाने के ढेर के चारों ओर स्वेत सूत का दोहरा धागा लगा दिया जाता है जिससे बुरी आत्मा का प्रवेश वहाँ पर न हो सके।

मीलों में धान से चावल निकाले जाते हैं। गाँवों में ढेकली में काँड कर चावल अलग किया जाता है। थाई

देश दर्शन

देश के चावल की ८० प्रतिशत उपज बाहर भेजी जात है।

धान अथवा चावल ढोने का काम नाव और बैलगाड़ियों द्वारा होता है। हाँग काँग, चीन के बन्दरगाह, जापान, सिंगापुर, योरुप, इंगलैंड, पूर्वी द्वीपसमूह, क्यूबा, मलय प्रायद्वीप, हालैंड, डेनमार्क, इटली, फ्रांस, बेल्जियम, दक्षिणी अफ्रीका, भारतवर्ष और फारमूसा आदि देशों को थाई देश का चावल भेजा जाता है।

उपज

थाई देश की उपज तथा खनिज सम्पत्ति

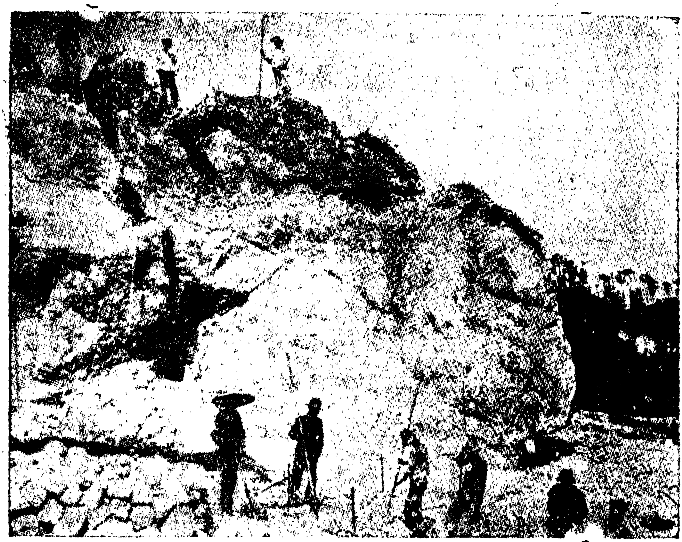
थाई देश की मुख्य उपज धान है। इसी नाज पर थाई देश की जनता निर्भर करती है।

ईख की खेती थाई देश में उन्नीसवीं तथा बीसवीं सदी में बहुत होती थी परन्तु अब इनकी खेती कम हो गई। लोग ईख के खेतों में धान उगाने लगे हैं। वर्तमान समय में थाई देश में २०,००० एकड़ ईख की खेती होती है। ईख वाले प्रदेश में चीनी बनाने के मुख्य कारखाने चोलबूरी ज़िले में हैं।

कपास—उत्तरी पूर्वी और उत्तरी मध्यवर्ती थाई देश में कपास की उपज होती है। परन्तु जितनी कपास उगाई जाती है वह सभी थाई देश में खर्च हो जाती है। लगभग १०,००० एकड़ भूमि में कपास बोई जाती है और लगभग ४८,००,००० पौंड कपास प्रति वर्ष पैदा होती है।

रबर—दक्षिणी प्रान्तों तथा चन्दबूरी प्रान्त में रबर की उपज की जाती है। ऊपर थाई देश में जलवायु के

अनुकूल न होने के कारण रबर की खेती नहीं हो सकती है।



खांग का या पहाड़ी खान। पहाड़ी ढाल में पहले पानी छोड़ा जाता है। जब मिट्टी चिकनी गीली हो जाती है तब लोहे की सलाख से उसमें से टीन अलग कर ली जाती है।

मिर्च—ईख की भांति ही लाल मिर्च की उपज कम हो गई है। चन्दबूरी प्रान्त में इसकी उपज अधिक होती है।

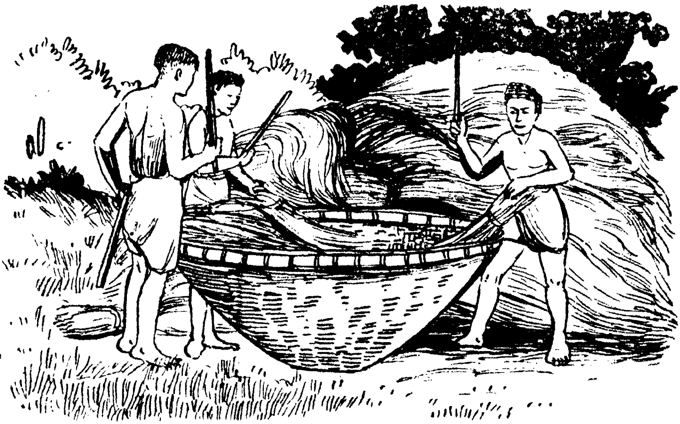


प्रातःकाल बाज़ार की ओर जाने का साधारण दृश्य



पंख के पंखे स्मृति रूप में रक्खे जाते हैं

नारियल—चन्द्रबूरी और दक्षिणी भाग में नारियल अधिक होता है। नारियल विदेश को भेजा जाता है। और इससे थाई सरकार को काफी लाभ होता है।



चोरगमाप, थाई देश में नाज का पीटा जाना

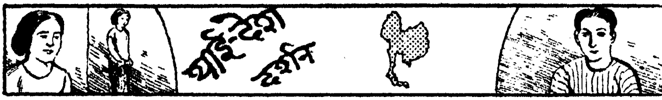
तम्बाकू—तम्बाकू थाई देश के लगभग सभी भागों में उगाई जाती है। परन्तु बयाब, बिस्नूलोक और राजबूरी में अधिक पैदा होती हैं। थाई लोग तम्बाकू बहुत खाते पीते हैं। तम्बाकू की खेती लगभग २५,००० एकड़ में होती है और उपज १५० लाख पौंड है। दक्षिणी देशों और सिंगापुर को तम्बाकू भेजी जाती है। थाई देश की तम्बाकू तेज़ और तीखी होती है।

इसके सिवा बाजरा, ज्वार, दाल, तिल, सोयाबीन रेंडी आदि की भी उपज होती है। नासपाती, आम, कटहल, नींबू, नारियल, केला, सुपारी, संतरा, अमरूद, जामुन, इमली, तरबूज आदि भांति भांति के फल पैदा होते हैं। तरकारियाँ भी भांति भांति की पैदा होती हैं।

थाई देश में भाँति भाँति की खनिज सम्पत्ति पाई जाती है जिसमें सोना, सीसा, ताँबा, टिन, लोहा, कोयला, जस्ता, हीरा आदि प्रसिद्ध हैं।

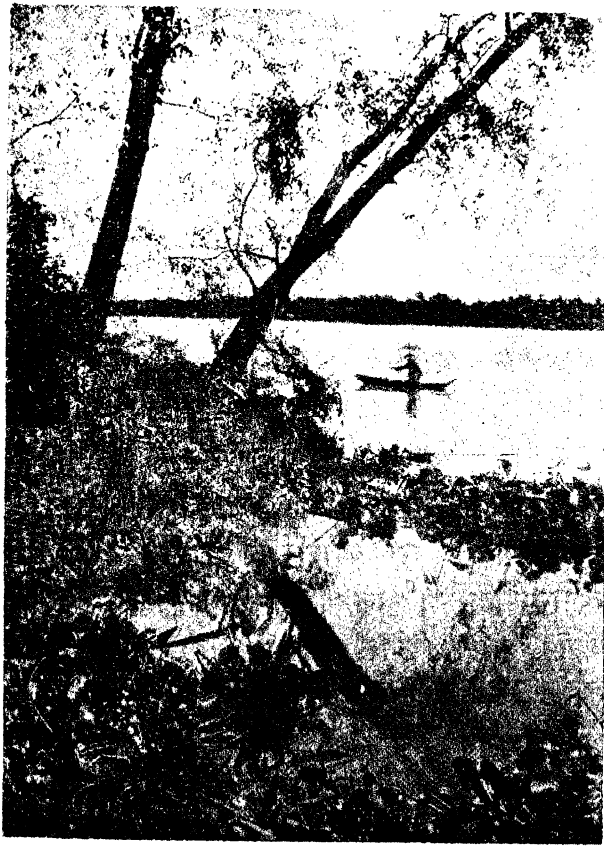
इनमें सबसे प्रसिद्ध टिन है यह थाई देश के दक्षिणी भाग में निकलती है। टिन के प्रदेश में तकुआया, रेनोङ्ग, पाँगनगा, ट्रांग, क्राबी और सातूल के प्रदेश हैं। बंग सपान, बाटना, मुवांग, लोम और बूगी के जिलों में सोना पाया जाता है।

तांबा चांतुक कागफा, लोपबूरी आदि प्रान्तों में मिलता है। कोयला क्राबी, ट्रांङ्ग कियान्सा में पाया जाता है। लोहा थाई देश के लगभग सभी देशों में पाया जाता है। इसी प्रकार दूसरी धातुएँ थाई देश में वर्तमान हैं।



बन

स्याम देश के बहुत से भाग बनों से घिरे हुये हैं। उत्तरी भागों के पेड़ गरमी और खुश्की की ऋतु में पत्तियाँ झाड़ देते हैं। दक्षिणी भागों में अधिक वर्षा होने से सदा हरे भरे रहने वाले पेड़ होते हैं। कुछ भागों में पतझड़ और सदा बहार पेड़ों की खिचड़ी है। देवदारू के पेड़ उत्तरी भागों में लगभग ५००० फुट की ऊँचाई पर मिलते हैं। गोरन के बन तट के पास दलदली भागों में पाये जाते हैं। अधिकतर भागों में उष्ण कटिबन्ध के बन हैं। इन बनों में खैर, साल, सागौन आदि कई तरह के पेड़ मिलते हैं पर व्यापार की दृष्टि से सागौन बड़ा मूल्यवान होता है। साल के बनों की लीज़ १५ वर्ष का (पट्टा) ब्रिटिश, डेनिश और फ्रांसीसी कम्पनियों को मिला हुआ है। देख भाल करने के लिये जङ्गल का विभाग स्थापित हो गया है। जब सागौन का पेड़ पर्याप्त मुटाई का हो जाता है तब वह कुल्हाड़ी से चारों ओर से इस तरह काटा जाता है कि वह खड़ा-खड़ा सूखता रहे। हरा पेड़ इतना भारी होता है कि वह पानी में बहा



प्रबल वर्षा और गरमी के कारण यहाँ नदियों के किनारे भी हरियाली से ढके रहते हैं।



कर नहीं लाया जा सकता। एक दो वर्ष में जब पेड़ का रस निकल जाता है और वह काफी सूख जाता है तब वह काट कर गिरा दिया जाता है। इन पेड़ों के लट्ठों को खींच-खींच कर पास वाले नालों में डाल देते हैं। पहले ये लट्ठे यहीं पड़े रहते हैं दूसरे वर्ष जब वर्षा की बाढ़ आती है तब वे छोटे नाले से बड़े नाले में और बड़े नाले से प्रधान नदी में पहुँचाये जाते हैं। प्रधान नदी तक पहुँचने में कभी-कभी कई वर्षा ऋतुओं की आवश्यकता होती है। प्रधान नदी में लट्ठों को बेंत से बांध कर बेड़ा बना लेते हैं। फिर लट्ठों के बेड़े नदी के नीचे की ओर पकनाम्पोह तक बहाये जाते हैं। यहां उन पर सरकारी चुंगी वसूल की जाती है। पकनाम्पोह के नीचे मीनाम नदी में बह कर ये लट्ठे बङ्कोक में पहुँचते हैं। औसत से हर साल एक लाख लट्ठे पकनाम्पोह से बङ्कोक आते है कुछ लट्ठे मीकांग (मीखोङ्ग) नदी में बह कर सैगोन (फ्रान्सीसी इंडो चीन) में पहुँचते हैं। कुछ लट्ठे सालवीन के मार्ग से मौलमीन (बरमा) पहुँचते हैं। बङ्कोक में आरा चलाने के पाँच बड़े-बड़े कारखाने हैं। इनमें चार अंग्रेज़ी और एक डेनिश (डेनमार्क वालों का)

है। इन मिलों में इन्जीनियर और देख भाल करने वाले योरुपीय हैं। मज़दूर चीनी, स्वामी और बरमी हैं। स्यामी कारखाना बङ्कोक से ५० मील पूर्व स्याम की खाड़ी पर स्थित है। लेकिन इसमें सागौन की लकड़ी नहीं रहती है। इसमें श्रीरच के वनों की कड़ी लकड़ी आती है। इस प्रकार सागौन की लकड़ी का कारबार एकदम योरुपीय लोगों के हाथ में है। बाहर भेजने के पहले लट्ठों को चीर कर तख्ते बना लेते हैं।

रोज़वुड, माईयांग, माई डैंग, माई प्राद् आदि दूसरी सख्त लकड़ियां भी बाहर भेजी जाती हैं। बनों से गोंद तारपीन, वार्निश और भी कई तरह की चीज़ें मिलती हैं। गोरन की छाल चमड़ा कमाने के काम आती है। पर आजकल स्टिक लाख की बड़ी मांग है। यह लाख ग्रामोफोन के रिकार्ड बनाने के काम में आती है। माई राक पेड़ से काली बार्निश तैयार की जाती है यहाँ के चाय का पेड़ बड़ा होता है और कई भागों में जङ्गली होता है।

पशु

श्याम देश का सब से अधिक उपयोगी पशु भैंसा और भैंस है। प्रायः सभी भागों में भैंसा पाया जाता है। सारे देश में लगभग ४० लाख भैंसे हैं। भैंसा खेत



सुअर

जोतने और बोझा ढोने के काम आता है। देश में लगभग इतने ही गाय बैल हैं। बैल भी गाड़ी खींचने के काम में आते हैं। कुछ गाय-बैल कटने के लिये सिंगापुर

भेज दिये जाते हैं। हाथी बहुत भारी बोझा ढोने के काम आता है। जिन भागों में भैंसा या बैल गाड़ियाँ नहीं चल सकतीं उनमें हाथी ही काम आता है। देश में लगभग ८ हज़ार पालतू हाथी हैं। सफेद हाथी पालने का अधिकार केवल राजवंश का प्राप्त है।

देश में लगभग ढाई लाख घोड़े हैं। सबसे अधिक टट्टू अयुध्या में हैं। स्यामी टट्टू देखने में दुबला पतला मालूम होता है पर वह बड़ा मज़बूत होता है। नस्ल सुधारने के लिये कुछ वेलर घोड़े आस्ट्रेलिया से मँगाये गये हैं। स्यामी राजघराने और अमीरों को घुड़दौड़ का बड़ा शौक है। इसी से घोड़ों के पालने में वृद्धि हुई है। स्याम देश के बीच में लोमशाक नगर घोड़ों का केन्द्र है।

देश में लगभग १० लाख सुअर हैं। सुअरों का व्यापार चीनी लोगों के हाथ में है। चीनी लोग सुअर का मांस बहुत पसंद करते हैं। कुछ ज़िन्दा सुअर भी बाहर भेजे जाते हैं।

मुर्गी और लाल बतख सभी भागों में पाली जाती हैं। सबसे अधिक मुर्गियाँ दक्षिणी भाग से बाहर भेजी जाती हैं।

हाथी

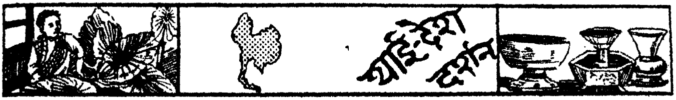
थाई देश का मुख्य पशु हाथी है। उत्तर और दक्षिण के मैदानी बनों में हाथी पाये जाते हैं। थाई देश के हाथी दस ग्यारह फुट के होते हैं। हाथी की ऊँचाई उसके पैर की मोटाई की दुगुनी होती है।

हाथी के हांकने वाले को महावत कहते हैं। जब महावत हाथी पर चढ़ना चाहता है तो हाथी अपने अगले पैरों को झुका कर सीढ़ी बना देता है। जैसे ही महावत हाथी के अगले पैर पर पाँव रखता है हाथी एक प्रकार से उसे उछालता है और महावत उसकी पीठ पर पहुँच जाता है। महावत हाथी की गर्दन पर बैठ कर हाथी को हांकता है। महावत हाथी को हांकने के लिये अंकुश का प्रयोग करता है। अंकुश का प्रयोग महावत बहुधा किया करता है।

सागौन के बनों में हाथी से बहुत काम लिया जाता है। नर हाथी के दांत होते हैं और उनका मूल्य ७५०० से ६००० रुपये तक होता है। मादा हाथी से काम नहीं लिया जाता है। हाथी गर्मी के समय १० बजे से तीन

बजे तक काम में नहीं लाया है। २५ साल की अवस्था में हाथी काम करने के योग्य हो जाता है और ७० साल की अवस्था में यह खूब काम करने लगता है। ७० साल की अवस्था में १४ मन का बोझ हाथी सरलता से उठा लेता है और ८४ मन का लट्ठा सूंड से घसीट कर ले जा सकता है। हाथी बहुत दिनों तक जीवित रहते हैं कभी कभी हाथी १५० साल तक जीवित रहता है।

बनों में लोग लम्बी बड़ी कुल्हाड़ियों से काट कर वृक्ष गिराते हैं। पेड़ काट कर बर्षा ऋतु में गिराये जाते हैं जिससे नम भूमि पर गिरने से हानि होने का भय नहीं रहता है। लकड़ी के लट्ठे समानान्तर रूप में हाथियों द्वारा लगा दिये जाते हैं उसके बाद हाथी उन्हें ढकेल कर नदी में ले जाते हैं। छोटे तनों को बड़े लट्ठों के नीचे लगाकर लट्टों के ढकेलने का काम लिया जाता है। बन से नदी तक की अधिक से अधिक दूरी लगभग दस मील होती है। हाथी एक घंटे में तीन मील से भी कम चलता है इसलिये लट्ठों को नदी किनारे ले जाने का काम बड़ा कठिन होता है। नदी के किनारे लट्ठे एकत्रित किये जाते हैं जहां पर



खरीदने वाले लोग जाते हैं। वर्षा अधिक होने पर छोटे नदी नालों द्वारा लट्ठे बहा कर बड़ी नदियों में लाये जाते हैं। बड़ी नदी में आकर लट्ठों का बेड़ा बनाया जाता है और वहाँ से वह लकड़ी के चीरने वाले बड़े कारखानों में पहुंचाये जाते हैं। वृक्षों के गिराने की तयारी तथा चीरने के लिये पहुँचाने तक में पांच पांच साल लग जाते हैं।

कारखानों के समीप पहुँचने पर दूसरे हाथी लट्ठों को किनारे लगाते हैं। यह हाथी इतने चतुर होते हैं कि महावत को कष्ट नहीं करना पड़ता है और वह स्वयम् अपना कार्य करने लगते हैं। काम समाप्त होने पर जब भोजन करने के लिये घंटा बजता है तो स्कूल के बालकों की भांति हाथी बड़े प्रसन्न हो जाते हैं और मारे खुशी के चिल्लाने लगते हैं।

हाथी बड़ा चतुर पशु होता है। रात को वह चरने के लिये छोड़ दिया जाता है। उसके पैर में एक जंजीर बंधी रहती है जिससे जिस ओर हाथी जाता है उसकी रगड़ भूमि में बनी रहती है उसी के चिन्ह से महावत हाथी :का पता लगाता है। परन्तु जो हाथी भागना

चाहता है वह जंजीर को अपनी सूंड़ में उठाकर भाग कर छिप जाता है।

हाथी के गले में एक घंटा भी बँधा रहता है उसकी आवाज़ से भी महावत हाथी का दूर से भी पता लगा लेता है परन्तु जो हाथी बचना चाहता है वह अपनी सूंड़ से घंटे को अलग कर देता है और भाग कर छिप जाता है। हाथी बहुधा क्रोधित होने पर महावत को अपनी गर्दन से गिरा कर पैरों के तले कुचल डालता है।

काम करने वाला हाथी अपने सुस्त भाई के शरीर में अपने दांत गड़ा कर काम करता है। हाथी जब एक दूसरे से लड़ते हैं तो वह एक दूसरे की पूँछ काटते हैं।

हाथी तीन दिन काम करता है और फिर तीन दिन आराम करता है। हाथी एक बार में तीन चौथाई मील से अधिक दूरी तक लट्ठा नहीं ले जा सकता है। वह लट्ठों को तीन चौथाई मील पर एकत्रित करता है उसके बाद फिर दूसरे तीन चौथाई मील चलता है। हाथी पुलों को बिना अजमाये नहीं पार करता है। हाथी खच्चर और टट्टुओं से डरते हैं। थाई देश के नियम के अनुसार

मार्ग में यदि टट्टू को हाथी मिलता है तो टट्टू मार्ग से अलग हो जाता है।

प्राचीन काल में थाई देश के राजा हाथी की सवारी किया करते थे और सेना में भी हाथियों का प्रयोग होता था। उस समय जंगली हाथियों को पकड़ने के लिये पालतू हाथियों का प्रयोग होता था। उस समय आधे जंगली हाथी किसानों का धान खाकर जीते थे। अब हाथी पर सवारी करने का रिवाज कम हो गया है सेना में भी प्रयोग नहीं किये जाते इसलिये वह दूर बनों में भगा दिये गये हैं।

स्याम अथवा थाई देश को स्वेत हाथियों का देश कहा जाता है। वहाँ के राष्ट्रीय झंडे की ज़मीन लाल होती है और उस पर स्वेत हाथी बना रहता है। मन्दिर, सरकारी भवन आदि पर स्वेत हाथी की शकल पत्थर लकड़ी तथा प्लास्टर पर बनी रहती है।

प्राचीन काल में यदि यहाँ के किसी राजा के पास स्वेत हाथी नहीं होता था तो वह अपने को राजा नहीं समझता था। वह स्वेत हाथी को प्राप्त करने के लिये युद्ध करने पर तयार हो जाता था। एक कहानी है कि

गौतम किसी समय में स्वेत हाथी थे और उनकी मां ने उन्हें स्वप्न में देखा था कि वह एक बार गौतम से स्वेत हाथी के रूप में स्वर्ग में मिली थी। एक दूसरी कथा यह है कि संसार में कोई न कोई राजा किसी समय पैदा होता है जो चक्रवर्ती होता है और संसार के समस्त देशों पर राज्य करता है। उसके पास ७ अनोखी वस्तुएँ होती हैं। उनमें एक स्वेत हाथी होता है। बिना स्वेत हाथी के वह संसार का राजा नहीं हो सकता। थाई लोगों का विश्वास है कि स्वेत हाथी के अन्दर कोई बड़ी आत्मा निवास करती है यह आत्मा किसी बड़े व्यक्ति की होती है जो भूत काल में उत्पन्न हो चुका है या भविष्य में उत्पन्न होने वाला है।

प्राचीन काल में किसी भी व्यक्ति को स्वेत हाथी रखने की आज्ञा नहीं थी। यदि अचानक किसी को स्वेत हाथी मिल जाता था तो वह शीघ्र ही उसे राजा को दे देता था यदि वह उसे रखने का प्रयत्न करता था तो राजा उस पर चढ़ाई करता था और उससे ज़बरदस्ती छीन ले जाता था।

सचमुच स्वेत हाथी नहीं होता। स्वेत हाथी का रंग

मामूली हाथी को अपेक्षा कुछ स्वेत होता है। उसकी पूँछ या सिर पर कुछ स्वेत बाल होते हैं।

स्वेत हाथी के मिलने पर लोगों के मध्य और राजा को बड़ी खुशी होती है। राजा सरदारों तथा राज-कुमारों को उसे देखने भेजता है और समस्त देश से लोग भेंट लेकर उसके पास जाते हैं। पालतू हाथी उसे मनुष्यों के बीच आचार विचार की शिक्षा देते हैं।

जब वह पालतू बन जाता है तो राजधानी में उसके स्वागत के लिये स्थान बनाया जाता है और एक बड़े जुलूस के साथ उसका स्वागत होता है और वह बड़े समारोह के साथ घर लाया जाता है। राजा जुलूस के आगे आगे स्वेत हाथी के स्वागत को जाता है। उसके समीप जाकर वह उसे सास्टांग दंडवत करता और भेंट देता है और फिर राजधानी को वापस आता है। उसकी खुशी में नाच· गाने होते हैं। उसे सुन्दर फल तथा साग पात भोजन के लिये दिये जाते हैं।

लगभग ४० वर्ष का समय बीता कि एक शिकारी दल ने एक बड़े तगड़े हाथी को देखा, उन्हें प्रतीत हुआ कि वह स्वेत हाथी है। उन्होंने उसे पकड़ कर नहलाया

तो अचम्भे के साथ देखा कि उसका रंग हल्का है उसके पीठ पर कुछ स्वेत बाल हैं। वह बैंकाक में लाया गया। राजा उससे मिलने गया और भेंट दिया। समस्त नगर में रोशनी की गई, झंडे फहराये गये, गाना बजाना हुआ, ब्राह्मणों ने स्वेत हाथी को प्रसन्न करने के लिये प्रार्थना किया।

ब्राह्मणों ने उसे शुद्ध किया, उसका नामकरण किया, उसको पदवी दी गई, वस्त्र पहिनाया गया और ईख खाने को दी गई। हाथी ईख बहुत पसंद करता है। वह अपने स्थान में रहने के लिये ले जाया गया। वहां उसे लोगों ने चांदी के थाल में भोजन दिया।

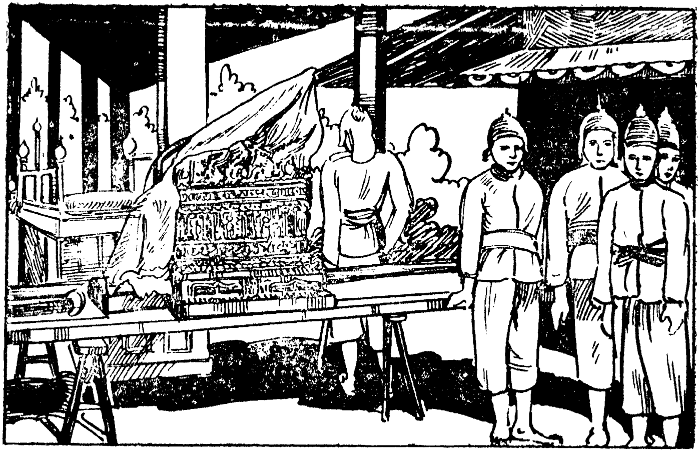
अब दशा बदल गई है और स्वेत हाथियों का सत्कार पहले की भांति नहीं होता है। उन्हें मामूली हाथियों की भांति रक्खा जाता है और घास पत्ती आदि भोजन के लिये दिया जाता है। स्वेत हाथी की भांति स्वेत बन्दर भी बहुत कम मिलता है।

साल में एक बार ब्राह्मण लोग प्रत्येक हाथी पर पवित्र पानी छोड़ते हैं और उसे लम्बी प्रार्थनायें सुनाते

हैं। यह संस्कार इसलिये किया जाता है कि दुष्ट आत्मा उसके भीतर प्रवेश न करे। जब हाथी मरता है तो थाई लोग कुछ ब्राह्मण, कुछ डाक्टर और एक श्वेत बन्दर को उसे दिखाने के लिये ले आते हैं। जहां पर हाथी पड़ा रहता है उसी की बगल में गढ़ा खोदकर वह उसी में खुशबूदार वस्तु डाल दी जाती है। हाथी के शरीर पर श्वेत वस्त्र डाल कर नगर में घुमा कर खेत में उसे डाल दिया जाता है जहां पर उसका शरीर सड़ जाता है। सड़ जाने के बाद उसकी हड्डियां तथा दांत एकत्रित किये जाते हैं और उन्हें रक्खा जाता है। हाथी के मरने के बाद उसकी स्तबल में ब्राह्मण लोग तीन दिन तक लगातार प्रार्थना करते रहते हैं कि उसकी आत्मा लौट कर किसी प्रकार का उपद्रव न करे।

कारबार

स्याम देश में धान कूटने की मिलें प्रायः सभी भागों में मिलती हैं। पहले बङ्कोक में ही धान कूटने की मिलें थीं। इन मिलों का कारबार प्रायः चीनी लोगों के हाथ में



थाई देश की सुनहरी पालकी बनाना

है। अधिकतर मिलें स्टीम से चलती हैं। कुछ मोटर से, कुछ बिजली और कुछ हाथ से चलती हैं। हाथ की मिलें सबसे अधिक पुरानी हैं। पर अब वे बहुत कम रह गई हैं। स्टीम, मोटर या बिजली से चलने वाली मिल औसत से एक दिन में १४० टन चावल कूट लेती है। इन मिलों



में काम करने वाले सारे मज़दूर चीनी हैं। इसी से बङ्कोक और स्वाटाओ के बीच में हज़ारों मज़दूर बराबर आते जाते रहते हैं।

किसान अपने धान को अढ़तियों के हाथ बेचते हैं। ये लोग फिर मिलों को धान बेचते हैं। मिल वाले धान से चावल तयार कर दिसावर भेजते हैं। एक को छोड़कर आरा चीरने की सभी मिलें योरुपीय लोगों के हाथ में हैं। सागौन की लगभग तीस फीसदी लकड़ी देश में खर्च होती है। ७० फी सदी लकड़ी बाहर भेज दी जाती है।

बिजली के बड़े कारखाने केवल दो हैं। इनसे शहर को बिजली की रोशनी मिलती है और ट्रैम्बे चलते हैं। ये कारखाने बेलिजयम और डेनिश लोगों के हाथ में हैं। एक जहाज़ी कम्पनी स्यामी और दूसरी ब्रिटिश है। एक दो सीमेन्ट बनाने के कारखाने हैं। कागज़ बनाने का एक छोटा सा कारखाना फौजी विभाग के हाथ में है। बैल गाड़ियां और भैंसा गाड़ियां सब कहीं बनती हैं। चेंगमाई में लेकर (वार्निश) का काम होता है।



उत्तरी स्याम के शान लोग सात्वीन प्रदेश में बसे हुये हैं। शान लोग अपने को ताई याई (बड़े ताई) और स्यामियों को ताई नोई (छोटे ताई) कहते हैं। शान लोग बड़े पक्के व्यापारी हैं। वे स्याम देश भर में फेरी लगाते हैं।

चावल से शराब बनाने का काम सरकारी लाइसेंस मिलने पर ही किया जा सकता है। नमक बनाने का काम कई भागों में होता है। अधिकतर नमक समुद्र के पानी को सुखाकर तयार किया जाता है। नमक बनाने का काम नवम्बर से अप्रैल तक होता है। उत्तरी-पूर्वी भाग में नमकीन कुओं और लूनी मिट्टी से भी नमक तयार किया जाता है। उत्तरी स्याम (नान) में कुछ सेंधा पहाड़ी नमक भी मिलता है।



व्यापार

बहुत प्राचीन समय में बाहरी व्यापार राजा के नियन्त्रण में था। वह अपनी सहायता के लिये एक मंत्री नियुक्त कर देता था। यह मन्त्री बाहरी डच, मूर, अंग्रेज़ी और दूसरे व्यापारियों से सम्बन्ध रखता था। पर इसमें



स्याम देश में अयुध्या नगर का नदी पर लगने वाला बाज़ार

झगड़े बहुत होने लगे। इसलिये यह प्रथा बदल गई। १८५५ के बाद केवल चुङ्गी वसूल करने के लिये एक सरकारी विभाग हो गया। व्यापार में सब को स्वाधीनता हो गई। आजकल स्याम देश का समस्त व्यापार

लगभग ५० करोड़ रुपये का होता है। पर स्यामी लोग अपने देश के व्यापार में बहुत कम भाग लेते रहे हैं। अधिकतर स्यामी लोग किसान हैं। उच्च वर्ग के सभी लोग सरकारी कर्मचारी हैं। व्यापार को ये लोग नीच



उत्तरी स्याम के एक भाग को चावल की रोटी बेचने वाली

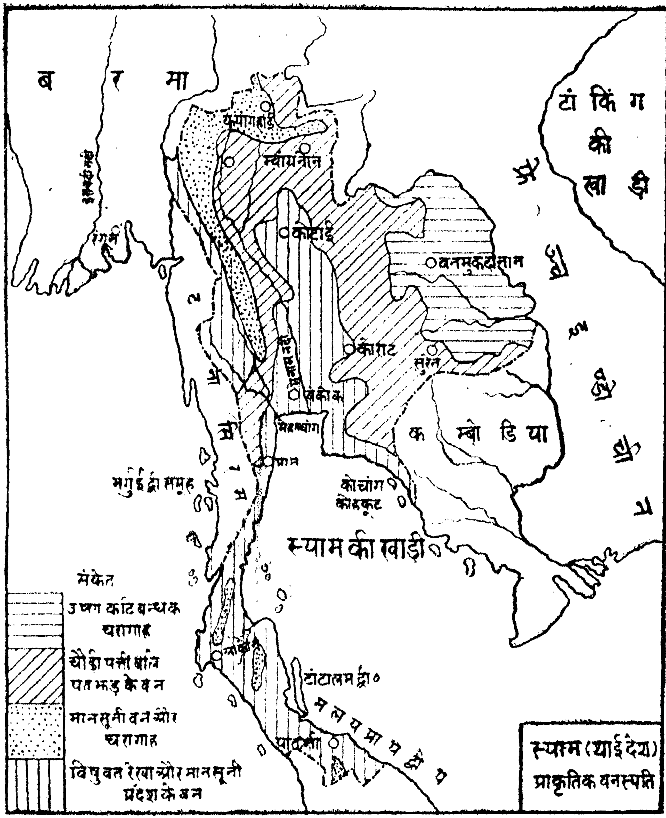
कर्म समझते रहे। इससे देश का छोटा व्यापार चीनी और बड़ा व्यापार योरुपीय लोगों के हाथ में चला गया। यहाँ कुछ व्यापारी हिन्दुस्तानी भी हैं पर अब यह हालत बदल रही है। स्यामी लोग अपने देश के व्यापार में दिलचस्पी लेने लगे।

चावल, टीन, सागौन, स्टिक, लाख, रबड़, लकड़ी, चमड़ा, जिन्दा जानवर, तम्बाकू, शक्कर, नमकीन मछली, रेशम, हीरा जवाहरात, कपास, कालीमिर्च, चमड़ा, गोंद, इलायची, हाथी दाँत, चीते की हड्डियाँ, शार्क मछली के सिन्ने, प्याज़ और ताजे फल यहाँ के प्रमुख निर्यात हैं।

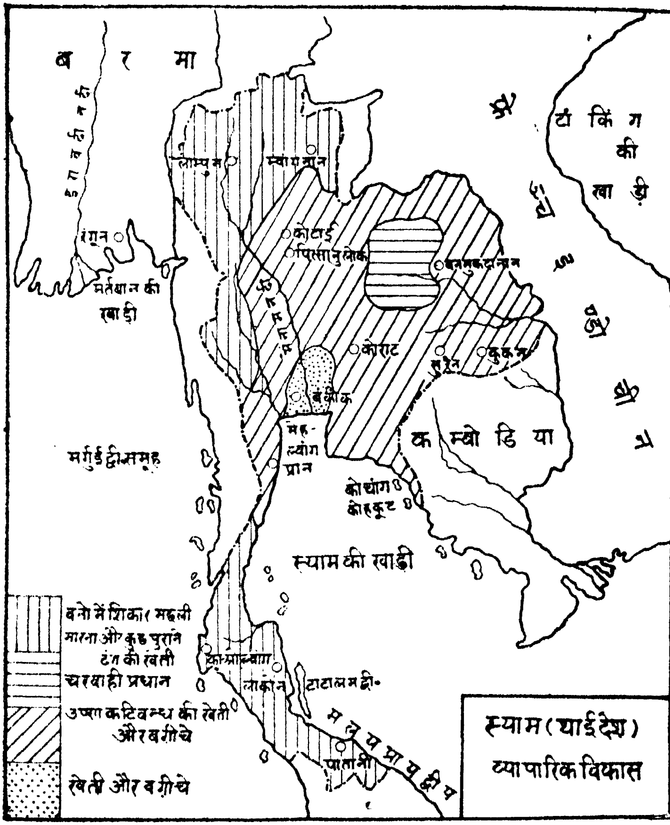


स्याम की एक सवारी गाड़ी का डिब्बा

सूती कपड़ा, खाद्य पदार्थ, शराब, लोहे का सामान, बोरे (चावल भरने के लिये)। मिट्टी का तेल, सिगरेट, कागज़, शीशा, दवाइयां सुगन्धित चीज़ें, बिजली का सामान, मोटर, चटाइयाँ, ज़ेवर और दियासलाई यहां के प्रधान आयात हैं।



स्याम देश के तटीय भागों और मलय प्रायद्वीप में विषुवत रेखा के समान सघन वनस्पति है। अधिक ऊपर की ओर भी बन हैं, कुछ भागों में ऊँची घास है।



स्याम के पहाड़ी भागों से सागौन और दूसरी मूल्यवान लकड़ी मिलती है। उपजाऊ मैदान में धान, तम्बाकू और उष्ण कटिबन्ध की दूसरी फसलें होती हैं। कुछ खुश्क भागों में कपास होती है। यहां गाय, बैल, भैंस और हाथी पाले जाते हैं। मलय प्रायद्वीप में टीन निकाली जाती है।

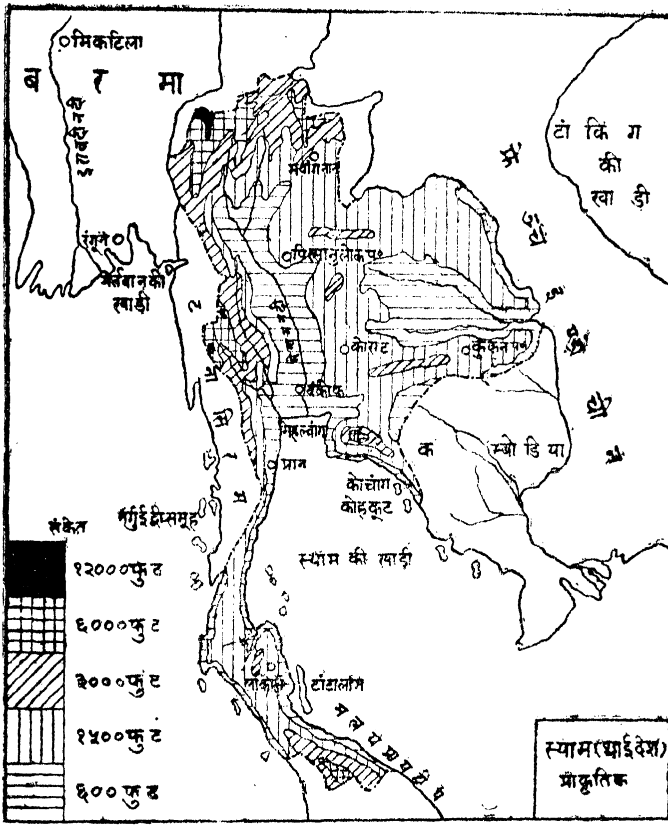


प्राकृतिक वर्णन

स्याम देश का क्षेत्रफल २ लाख वर्गमील है। इसकी राजधानी बैंकाक है। यह दक्षिण में कलान्त और पेराक राज्यों की सीमा से आरम्भ होकर उत्तर के फ्रेंच इण्डो-चाइना और यूनान तक चला गया है।

इसकी प्रधान नदी मीनाम चौफ़इया है जिसकी लम्बाई २५० मील है। ऐतिहासिक समय आरम्भ होने के पूर्व यह घने जंगलों से घिरा था। यहां वर्षा अधिक होती है। वर्षा काल अनियमित होता है। उपज की प्रधान वस्तु धान है। सिंचाई का काम वर्षा से ही सुसम्पन्न हो जाता है। भांति भांति के मेवा व फल से उत्पन्न होते हैं।

यह देश मुख्यतः ४ भागों में बँटा हुआ है। (१) उत्तरी भाग पार्वत्य-प्रदेश है जिसके सर्वोच्च शैल-शिखर का नाम डोई इन्टानन है। इसकी ऊँचाई ८,४५० फुट है। इस सघन-बन-संकुल प्रान्त में सागौन के मूल्य-वान वृक्ष बहुलता से उत्पन्न होते और देश-विदेश की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। शीत ऋतुओं में जाड़ा



स्याम देश का प्रधान भाग मीनाम नदी की घाटी ने बनाया है। यह भाग अधिक बड़ा नहीं है लेकिन यही भाग सबसे अधिक नीचा है। इस घाटी के उत्तर और पश्चिम के पहाड़ी भाग अधिक ऊँचे हैं। मलय प्रदेश का जो भाग स्याम के अधिकार में है वह भी कुछ पहाड़ी है। पहले स्याम के ही अधिकार में मीकांग नदी की घाटी थी।

अधिक पड़ता है। वर्षा प्रायः साठ इञ्च के लगभग होती है। इसका प्रधान नगर चिङ्गमयी है। मध्य भाग समुद्र की छोड़ी हुई मिट्टी से बना है। इसका धरातल ज्यों ज्यों दूर होता गया है त्यों त्यों ऊँचा होता गया है। इस भाग के जङ्गल खेती के लिये काट दिये गये हैं। इसका प्रधान नगर बैंकाक है। दक्षिणी भाग समतल है जो मलाया द्वीप तक फैला हुआ है। आज से ६०-७० वर्ष पहले एक बहुत बड़े तूफान के कारण इस प्रान्त के अधिकांश जंगल नष्ट हो गये हैं और शेष बचे-खुचे भी खान खोदने और खेती करने वालों से नष्ट किये जा चुके हैं। यहां का जलवायु अत्यन्त स्वास्थ्यकर है। वर्षा प्रायः प्रति वर्ष १०० इञ्च हो जाया करती है। इसका प्रधान नगर बुकेट है। (४) पूर्वी भाग पर्वत-मालाओं के बीच में ऊँचा प्रदेश है। सर्दी यहां बहुत कम पड़ती है। इस भाग का प्रधान नगर कोराट है।

देश दर्शन

'देश-दर्शन' ग्रन्थमाला में अब तक नीचे लिखे अंक प्रकाशित हो चुके हैं :—

लंका, इराक, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैण्ड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र १, मिस्र भाग २, फिनलैण्ड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन जीवन युगोस्लैविया, नार्वे, जावा, डेनमार्क, हालैंड, रूस, थाई देश, बलगेरिया और अलसेस लारेन।

मई का अंक 'अलसेस लारेन-दर्शन' छप रहा है। इसी प्रकार प्रत्येक महीने किसी एक देश का सचित्र पूरा वर्णन रहता है। इस ग्रन्थमाला में २०० से ऊपर पुस्तकें प्रकाशित होंगी। जो भूगोल के शुभचिन्तक, साहित्य-प्रेमी हैं उन्हें इस बात की अत्यन्त आवश्यकता है कि 'देश-दर्शन' के ग्राहक बन कर इन पुस्तकों से लाभ उठायें। वार्षिक मूल्य ४) है। मनीआर्डर से रुपये भेजने में डाक-व्यय चार आने की बचत होती है। वी० पी० मँगाने में चार आने अधिक वी०पी० खर्च लग जाता है।